डाक पंजिकृत ए/बी 123/21.23

झुग्गी झोपड़ी

प्रयागराज से प्रकाशित. हम बनेंगे आपकी आवाज हिन्दी दैनिक

Website : www.jhuggijhopri.com www.jjnews.in प्रयागराज,गुरूवार.24 नवंबर,2022 वर्ष–07 / अंक–194 प्रष्ठ–08 / मूल्य–2 रूपये

चुनाव से पहले भाजपा की बड़ी कार्रवाई

गुजरात विधानसभा चुनाव से पहले सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अपने बागी नेताओं के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की है। भाजपा ने छह बार के विधायक मधु श्रीवास्तव और दो पूर्व विधायकों सहित 12 पार्टी नेताओं को निलंबित कर दिया। इन्होंने विधानसभा चुनाव में पार्टी से टिकट न मिलने के बाद निर्दलीय उम्मीदवारों के रूप में नामांकन दाखिल किया है। यह कार्रवाई एक दिसंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव के पहले चरण में निर्दलीय उम्मीदवारों के रूप में नामांकन दाखिल करने के लिए सात भाजपा नेताओं को निलंबित किए जाने के कुछ दिनों बाद की गई है। भाजपा की प्रदेश इकाई द्वारा जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि विधानसभा चुनाव के पांच दिसंबर के दूसरे चरण की सीटों पर पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवारों के खिलाफ चुनाव लड़ने वाले 12 और नेताओं को गुजरात भाजपा अध्यक्ष सीआर पाटिल द्वारा निलंबित कर दिया गया है। नाम वापस नहीं लेने पर हुई अनुशासनात्मक कार्रवाई गौरतलब है कि दूसरे चरण में जिन 93 सीटों पर मतदान होना है, उसके लिए नामांकन वापस लेने की अंतिम तिथि 21 नवंबर थी। भाजपा के किसी भी बागी ने अपना नाम वापस नहीं लिया जिसके बाद उन्हें पार्टी की ओर से अनुशासनात्मक कार्रवाई का सामना करना पड़ा। ये नेता अब उत्तर और मध्य गुजरात की 11 सीटों पर भाजपा उम्मीदवारों के खिलाफ चुनाव लड़ेंगे।इन नेताओं में वाघोडिया (वडोदरा जिले) के मौजूदा विधायक मधु श्रीवास्तव शामिल हैं। साथ ही पाडरा के पूर्व विधायक दीनू पटेल और बायड के पूर्व विधायक धवलसिंह जाला भी उन 12 व्यक्तियों में शामिल हैं, जिन्हें पार्टी ने दंडित किया है। अन्य नेताओं में कुलदीपसिंह राउल (सावली), खाटूभाई पागी (शेहरा), एसएम खांट (लूनावाडा), जेपी पटेल (लूनावाड़ा), रमेश जाला (उमरेठ), अमरशी जाला (खंभात), रामसिंह ठाकोर (खेरालू), मावजी देसाई (धनेरा) और लेबजी ठाकोर (डीसा निर्वाचन क्षेत्र) शामिल हैं।

फ्रेट कॉरिडोर से एक्सप्रेसवे तक यूपी अव्वल निवेश के लिए उत्तर प्रदेश अनुकूल क्यों खुद सीएम योगी ने समझाया

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के कर्टेन रेजर सेरेमनी में यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बताया कि आखिर निवेश के लिहाज से राज्य में क्या बदलाव आए हैं और वह क्यों अनुकूल है। उन्होंने कहा कि राज्य में सबसे बड़ा 16 हजार किलोमीटर का रेलवे नेटवर्क और वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (डब्ल्यूडीएफसी) का 8.5 प्रतिशत और ईस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (ईडीएफसी) का 57 प्रतिशत क्षेत्र है। दोनों फ्रेट कॉरिडोर का जंक्शन दादरी (ग्रेटर नोएडा) में हैं।देश के सबसे बड़े राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क में से एक और 13 वर्तमान एवं आगामी एक्सप्रेसवे के प्रोजेक्ट के साथ राज्य में विश्वस्तरीय रोड कनेक्टिविटी की सुविधा है। ये एक्सप्रेसवे पूरे राज्य में मैन्युफैक्चरिंग केंद्रों को निर्बाध कनेक्टिविटी प्रदान करते हैं। लखनऊ, वाराणसी और कुशीनगर में मौजूद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों के साथ जेवर, अयोध्या में नए हवाईअड्डे बनने के बाद उत्तर प्रदेश पांच अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डों वाला देश का एकमात्र राज्य हो जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रयागराज व वाराणसी को हल्दिया बंदरगाह से जोड़ने वाला देश का पहला अंतर्देशीय जलमार्ग (इनलैंड वॉटरवे) विकसित किया जा रहा है। इसमें वाराणसी से हल्दिया (लगभग 1,100 किलोमीटर लंबा) तक का मार्ग पहले से ही संचालित है। समुद्री बंदरगाहों पर निर्यात होने वाले माल के आवागमन को सुविधाजनक बनाने के लिए सरकार ड्राई पोर्ट के विकास को बढ़ावा दे रही है।मल्टी–मॉडल लॉजिस्टिक हब होगा विकसितसीएम ने कहा, दादरी में एक मल्टी–मॉडल लॉजिस्टिक हब (एमएमएलएच) एवं बोडाकी में मल्टी–मॉडल ट्रांसपोर्ट हब (एमएमटीएच) भी विकसित किया जा रहा है। वाराणसी में 100 एकड़ में भारत का पहला श्फ्रेट विलेजश विकसित हो रहा है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के निर्यात केंद्रों को पूर्वी भारत के बंदरगाहों से जोडने वाला यह गांव इनबाउंड व आउटबाउंड कार्गो के लिए ट्रांस शिपमेंट हब के रूप में कार्य करेगा।7600 से अधिक स्टार्टअप उत्तर प्रदेश में अब तक पंजीकृत तथा 06 सेक्टर ऑफ एक्सीलेंस स्वीकृत किए गए हैं।राज्य को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का संकल्प...योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत की सोच इस कायाकल्प का प्रमुख स्तंभ है। भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के संकल्प में राज्य ने अपने लिए एक ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था का लक्ष्य रखा है।लोगो का अनावरण, पोर्टल लांच...मुख्यमंत्री ने ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस)–2023 के लोगो का भी अनावरण किया। साथ ही, निवेशकों की सहूलियत के लिए ऑनलाइन इंसेंटिव मैनेजमेंट पोर्टल और कस्टमर रिलेशनशिप मैनेजमेंट पोर्टल (निवेश सारथी) का भी शुभारंभ किया। इसके जरिये प्रत्येक एमओयू की प्रगति पर मुख्यमंत्री कार्यालय की नजर रहेगी।

संक्षिप्त सार

पीएम मोदी ने साधा कांग्रेस पर निशाना

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को गुजरात के मेहसाणा में एक जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी एक ऐसी पार्टी है जिसके लिए व्यक्ति से बढ़कर पार्टी और पार्टी से बड़ा देश है, यही हमारी संस्कृति है और हम इसी संस्कृति के साथ काम करते हैं। दूसरी ओर कांग्रेस भाई–भतीजावाद, जातिवाद, संप्रदायवाद और वोट बैंक की राजनीति का मॉडल है। कांग्रेस ने गुजरात और पूरे देश को बर्बाद कर दिया है।

पीएम मोदी का नारा हुआ हिट

कांग्रेस नेता का भाजपा पर हमला

कांग्रेस नेता मनीष तिवारी ने बुधवार को भाजपा सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने गुजरात में भ्रष्टाचार को वैध बनाने का आरोप लगाया। कहा कि ये लोकतंत्र के लिए खतरनाक संकेत हैं। तिवारी ने हाल ही में हुई मोरबी की घटना का हवाला देते हुए कहा कि भाजपा अहंकारी हो गई है क्योंकि वे (भाजपा) सोचते हैं कि उन्हें सत्ता से नहीं हटाया जा सकता है।

मोदी का नारा हुआ हिट

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नारा आ गुजरात मैं बनव्यू चेष्हिट हो गया है। इसका गाना भी बन गया है। लोग सोशल मीडिया पर अपनी सेल्फी और वीडियो अपलोड कर रहे हैं। अब तक 34 लाख से अधिक लोगों ने इस नारे के साथ अपनी फोटो या वीडियो पोस्ट की है। छह नवंबर को गुजरात के कपराडा में रैली को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने ये नारा दिया था। इसका मतलब श्मैंने इस गुजरात को बनाया हैश। उन्होंने कहा था, श्हर गुजराती, चाहे वह आदिवासी हो या मछुआरा, चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी, आज आत्मविश्वास से भरा हुआ है। इसलिए हर गुजराती कहता है श्मैंने यह गुजरात बनाया हैश।

भाजपा उम्मीदवार का पलटवार

कुटियाना से सपा उम्मीदवार कांधल जडेजा के खिलाफ चुनाव लड़ रहीं ढेलिबेन ओदेदारा ने भी कांधल पर पलटवार किया है। ढेलिबेन ने कहा, मेरे पास सपा प्रत्याशी के खिलाफ चुनाव लड़ने की हिम्मत है। मैं बड़े अंतर से चुनाव जीत जाऊंगी। कुटियाना के वोटर्स मुझे जानते हैं और मेरा सम्मान करते हैं। मैं गरीबों और अन्य लोगों की सेवा करती हूं। पूरा विश्वास है कि लोग मुझे वोट करेंगे।

मोदी बोले– गुजरात में रिकॉर्ड मतदान होगा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को कहा कि उन्हें उम्मीद है कि इस बार गुजरात चुनाव में रिकॉर्ड मतदान होगा। खासतौर पर युवाओं और पहली बार मतदान करने वाले यंग वोटर्स ज्यादा अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। बता दें कि जामनगर शाही परिवार के वंशज जाम साहब शत्रुशल्या सिंहजी ने सोमवार को डिप्टी कलेक्टर और अन्य चुनाव अधिकारियों की उपस्थिति में अपने आवास पर मतदान किया। इसके बाद मोदी की यह टिप्पणी आई है। मोदी ने गुजरात में पत्र सूचना कार्यालय के एक ट्वीट को टैग करते हुए कहा, श्मैं जाम साहब श्री शत्रुसल्यासिंहजी की लोकतंत्र के त्योहार के प्रति इस उल्लेखनीय जुनून के लिए सराहना करता हूं।श सपा उम्मीदवार का बड़ा दावा

गुजरात चुनाव में इस बार समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी भी मैदान में हैं। कुटियाना से सपा उम्मीदवार कांधल जडेजा ने कहा, श्जब मैं 2012 में यहां एनसीपी लेकर आया था, तब किसी को इसके बारे में पता नहीं था। मैंने दो बार चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। लोगों ने मेरे नाम पर वोट किया। मैंने पार्टी से इस्तीफा दे दिया, अन्य नेताओं ने भी पार्टी छोड़ दी। अब गुजरात में एनसीपी खत्म हो गई है। मैं अब साइकिल पर आ गया हूं।श सवाल पूछा गया कि आपको लोग प्यार से वोट देते हैं या डर के चलते तो कांधल ने इसका जवाब दिया। उन्होंने कहा, श्अगर आपने यही सवाल मुझसे 80 और 90 के दौर में पूछा होता तो मैं जरूर कहता कि ये डर के चलते है। तब बैलेट पेपर से वोट होते थे। अब ईवीएम है। लोग मेरे काम की वजह से मुझे वोट देते हैं। चुनाव जीतने के लिए अब मेरा नाम ही काफी है।श

ओवैसी की गोधरा में रैली

एआईएमआईएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी भी आज चुनावी सभा को संबोधित करेंगे। तय कार्यक्रम के अनुसार ओवैसी गोधरा में जनसभा को संबोधित करेंगे। यही वह गोधरा है, जहां दंबे भड़के थे।

हरभजन सिंह का रोड शो

आम आदमी पार्टी से राज्यसभा के सांसद हरभजन सिंह भी पार्टी प्रत्याशी के लिए आज चुनाव प्रचार करेंगे। गुजरात के बायड में आज रोड शो और सभा करेंगे। इसके बाद उनकी प्रेस कॉन्फ्रेंस भी होगी।

गुजरात का गांव, जहां वोट न डालने पर लगता है जुर्माना

गुजरात के राजकोट जिले में एक गांव है राजसमढियाल। इस गांव में राजनीतिक पार्टियों के गांव में प्रचार करने पर मनाही है। इसलिए ताकि गांव का वातावरण प्रदूषित न हो, माहौल न खराब हो। लोगों में राजनीतिक द्वेष न फैले। यही नहीं, गांव के सभी लोग अपने मताधिकार का प्रयोग करें, इसलिए भी नियम बनाया गया है। अगर कोई मतदाता यहां अपना वोट नहीं डालता तो उस पर 51 रुपयों का जुर्माना लगाया जाता है। इस गांव के सरपंच अशोक भाई वाघेरा कहते हैं, श्हमारे पूर्व सरपंच हरदेव सिंह जडेध्जा के समय से ही यहां चुनाव प्रचार की मनाही है। ऐसा इसलिए क्योंकि इस गांव के निवासी मानते हैं कि इस तरह माहौल खराब होगा।श

अमित शाह की कई रैलियां

आज गृहमंत्री अमित शाह गुजरात में कई चुनावी रैलियों को संबोधित करेंगे। शाह आज राजकोट के जशदन, सुरेंद्रनगर के पाटडी और बारडोली के सूरत में सभा करेंगे।

पीएम मोदी आज से फिर दो दिन के गुजरात दौरे पर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फिर से दो दिन के गुजरात दौरे पर हैं। इस दौरान वह कई जिलों में चुनावी रैली को संबोधित करेंगे। आज प्रधानमंत्री पाटीदारों के गढ़ और पाटीदार आंदोलन का केंद्र कहे जाने वाले मेहसाणा में एक रैली को संबोधित करेंगे।

पीएम मोदी का नारा हुआ हिट, मनीष तिवारी बोले– भाजपा ने भ्रष्टाचार को वैध बना दिया

बिस्वा बोले– हिंदू एक शादी करते हैं तो दूसरे धर्म के लोग क्यों नहीं?

गुजरात चुनाव में भाजपा प्रत्याशियों के लिए वोट मांगने में जुटे असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने समान नागरिक संहिता का मुद्दा छेड़ दिया है। गुजरात में एक रैली को संबोधित करते हुए असम के सीएम हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा कि अगर हिंदू एक शादी करता है, तो दूसरे धर्मों के लोगों को भी एक ही शादी करनी पड़ेगी। देश में समान नागरिक संहिता कानून बनना ही चाहिए। एक व्यक्ति 2–3 शादी कर लेता है। आखिर तुम 2–3 शादी क्यों करोगे? देश में जब हिंदू एक शादी करता है, तो बाकि के धर्मों को भी एक ही शादी करनी चाहिए।

आज कल सद्दाम हुसैन की तरह दिखने लगे हैं राहुल गांधी हिमंत सरमा ने कांग्रेस नेता पर कसा तंज

गुजरात में चुनाव के दिन नजदीक आने के साथ ही सभी पार्टियां जोर–शोर से प्रचार में जुट गई हैं। चुनावी मैदान में अपने दिग्गजों को भेजना शुरू कर दिया है। इसी क्रम में बीते मंगलवार को असम के मुख्यमंत्री और भाजपा नेता हिमंत बिस्वा सरमा चुनाव प्रचार के लिए कुबेरनगर आए थे और यहां उन्होंने एक जनसभा को संबोधित किया। अपने संबोधन के दौरान उन्होंने राहुल गांधी पर जमकर हमला बोला। उन्होने कहा कि राहुल गांधी इन दिनों इराक के तानाशाह सद्दाम हुसैन जैसे दिखने लगे हैं। उन्होंने सावरकर के ऊपर टप्पणी को लेकर भी राहुल पर नाराजगी जताई।आज कल राहुल सद्दाम हुसैन की तरह दिखने लगे हैंरू हिमंत सरमा राहुल गांधी पर तंज कसते हुए हिमंत सरमा ने कहा कि गांधी वंशज की छवि महात्मा गांधी या सरदार पटेल जैसी होनी चाहिए न कि पूर्व इराकी राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन जैसी। हिमंता ने कहा, अभी मैंने देखा है कि उनका(राहुल गांधी) चेहरा भी बदल गया है। वे आजकल इराक के तानाशाह सद्दाम हुसैन की तरह दिखने लगे हैं। चेहरा बदलना कोई बुरी बात नहीं है। आपको अगर चेहरा बदलना ही है तो वल्लभ भाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू या फिर गांधी जी जैसा कर लो लेकिन आपका चेहरा सद्दाम हुसैन जैसा क्यों होता जा रहा है?राहुल गुजरात में एक विजिटिंग प्रोफेसर की तरह आ रहे सरमा ने चुनाव से पहले राहुल गांधी के गुजरात दौरे पर सवाल उठाते हुए दावा किया कि वह राज्य में अदृश्य हैं। असम के सीएम ने कहा कि वह राज्य का दौरा ऐसे करते हैं जैसे कि वह एक विजिटिंग प्रोफेसर हों। उन्होंने हिमाचल प्रदेश में प्रचार भी नहीं किया। वह केवल उन जगहों पर जा रहे हैं जहां चुनाव नहीं हो रहे

हैं, शायद इसलिए कि वह हारने से डरते हैं।भारत जोड़ो यात्रा में शामिल होने के लिए बॉलीवुड सितारों को पैसे दिए गए असम के मुख्यमंत्री ने आगे दावा किया कि कांग्रेस ने राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा में शामिल होने के लिए बॉलीवुड सितारों को पैसे दिए। बता दें कि अभिनेत्री पूजा भट्ट और अमोल पालेकर, सुशांत सिंह जैसे अभिनेता इस यात्रा में भाग लिया था।पब्लिसिटी के लिए राहुल का नाम लेते हैं हिमंत सरमारू असम कांग्रेस प्रमुख सीएम सरमा की राहुल गांधी–सद्दाम हुसैन वाली टिप्पणी पर असम कांग्रेस प्रमुख भूपेन कुमार ने कहा कि असम के मुख्यमंत्री सिर्फ एक हेडलाइन चाहते हैं और आपको वह तभी मिलता है जब आप राहुल गांधी का नाम लेते हैं। हिमंत बिस्वा सरमा कुछ भी कह सकते हैं। वह सत्ता के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। हम ध्यान नहीं देते। गुजरात में एक और पांच दिसंबर को चुनाव, आठ को परिणाम बता दें कि गुजरात में दो चरणों में वोट डाले जाएंगे। पहले चरण की वोटिंग एक दिसंबर को होगी। इस दिन 89 सीटों पर वोटिंग होगी।वहीं, दूसरे चरण के लिए पांच दिसंबर को वोट डाले जाएंगे। वहीं मतों की गिनती आठ दिसंबर को होगी। इसके साथ ही पूरे राज्य में आचार संहिता की भी घोषणा हो गई।

दो जलाशयों को पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करेगा GDA

गोरखपुर सर्किट हाउस के सामने 6.50 एकड़ में फैले जलाशय को जीडीए पर्यटक केंद्र के रूप में विकसित करेगा। इसके सुंदरीकरण के साथ मनोरंजन के संसाधन भी उपलब्ध कराए जाएंगे। जलाशय के किनारे पैदल चलने के लिए रास्ता बनाया जाएगा। इसी तरह नया सवेरा के पास स्थित जलाशय का भी सुंदरीकरण किया जाएगा, ताकि पर्यटन की गतिविधियां संचालित की जा सकें।

गोरखपुर विकास प्राधिकरण (जीडीए) पहले खुद ही दोनों जलाशयों को पर्यटक केंद्र के रूप में विकसित करने वाला था। जुलाई माह में योजना भी तैयार की थी, लेकिन वह सिरे नहीं चढ़ सकी। अब इसे पीपीपी मोड पर विकसित करने का निर्णय लिया है। इच्छुक फर्म से एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट (ईओआई) मांगा गया है। जीडीए के मुताबिक, सर्किट हाउस के सामने स्थित जलाशय के 50 फीसदी हिस्से में संगीतमय फव्वारा और नौका विहार की सुविधा दी जाएगी। आधे हिस्से को अतिक्रमण से बचाने के लिए चहारदीवारी बनाई जाएगी। इसके चारों ओर आकर्षक व सुंदर पौधे लगाए जाएंगे। प्रकाश की व्यवस्था की जाएगी। विभिन्न तरह की दुकानों के लिए जगह बनाई जाएगी। पर्यटक अपने वाहन खड़ा कर सकें इसके लिए पार्किंग बनाई जाएगी, जिसकी क्षमता 20 कार और 50 बाइक की होगी। एक मनोरंजन उद्यान बनाया जाएगा। इसमें बच्चों के खेलने के लिए सुविधा और स्थान सुरक्षित किया जाएगा। एक टिकट घर भी बनाया जाएगा।

इसी तरह, नया सवेरा के पास स्थित जलाशय का भी पर्यटन के लिहाज से विकास किया जाएगा। वाणिज्यिक भूमि का इस्तेमाल कर नौका विहार, खाने–पीने की दुकानें, मनोरंजन उद्यान आदि विकसित किए जाएंगे, ताकि पर्यटन से संबंधित गतिविधियां संचालित की जा सकें। इससे न केवल जीडीए की आय में इजाफा होगा, बल्कि लोगों को रोजगार भी मिलेगा।

जीडीए ने सर्किट हाउस के सामने और रामगढ़ताल के सामने बौद्ध संग्रहालय तक फैले जलाशय के विकास के लिए पांच दिसंबर तक ईओआई मांगी है। रामगढ़ताल से 50 मीटर के दायरे में कोई पक्का निर्माण नहीं होगा। इच्छुक फार्मों को 15 साल के लिए लाइसेंस मिलेगा। पांच साल के लिए और बढ़ाया जा सकेगा। दोनों ही परियोजनाओं में तरल एवं ठोस कचरा प्रबंधन की जिम्मेदारी संचालकों की होगी।

जीडीए उपाध्यक्ष महेंद्र सिंह तंवर ने कहा कि रामगढ़ताल के आसपास रोजगार एवं पर्यटन विकास की संभावनाओं को बढ़ाया जा रहा है। इसी क्रम में ताल के सामने स्थित दो वाटर बॉडी (जलाशय) को पर्यटन के लिहाज से विकसित किया जाएगा। पांच दिसंबर तक ईओआई आमंत्रित की गई है।

विज्ञापन दर

समाचार पत्र का साइज 25x32

फुल पेज कलर प्रथम पेज 74 हजार रूपये मात्र।
फुल पेज कलर अंतिम पेज 49 हजार रूपये मात्र।
फुल पेज B/W प्रथम पेज 35 हजार रूपये मात्र।
फुल पेज B/W अंतिम पेज 19 हजार रूपये मात्र।
4x6 प्रथम पृष्ठ 3000 और दूसरी पेज 2000 ब्लैक
और कलर प्रथम पृष्ठ 5000 दुतीय पेज 3000
क्लासीफाइड विज्ञापन 250 रूपये मात्र।
क्लासीफाइड मंथली पांच हजार रूपये मात्र।
कोर्ट नोटिस प्रथम पार्टी 450 रूपये मात्र।

अधिक जानकारी के लिए कार्यालय मे सम्पर्क करे।
9918366626

जांच की आंच पहुंची मेडिकल कॉलेज की स्त्रीरोग विभागाध्यक्ष तक

सिद्धार्थनगर की निवासी चंदा त्रिपाठी की मौत के मामले की जांच की आंच बीआरडी मेडिकल कॉलेज की गायनी की विभागाध्यक्ष डॉ. वाणी आदित्या तक पहुंच गई है। जांच समिति ने उनके खिलाफ कार्रवाई की संस्तुति की है। यही नहीं, समिति ने मेडिकल कॉलेज की व्यवस्था को पूरी तरह से नाकाम बताया है। इसके लिए वरिष्ठ अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराया है।

जानकारी के अनुसार, चंदा त्रिपाठी की मौत मामले की जांच करने वाली शासन स्तर की जांच समिति को कई तरह की गड़बड़ियां मिली हैं। प्रमुख सचिव आलोक कुमार ने पत्र में बताया है कि जांच समिति को मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन और गायनी विभाग के बीच समन्वय की कमी मिली है। यही नहीं किसी तरह के प्रोटोकॉल यानी सामान्य शिष्टाचार का पालन भी नहीं किया गया।

अंतरविभागीय व्यवस्था भी नाकाम मिली है। इसकी वजह वरिष्ठ अधिकारियों की निगरानी में कमी है। इस आधार पर गायनी की विभागाध्यक्ष पर कार्रवाई करने की संस्तुति की जा रही है। वहीं, इस मामले में एक दिन पहले सोमवार को इमरजेंसी के सीएमएस को निलंबित किया जा चुका है। जबकि प्राचार्य से स्पष्टीकरण मांगा गया है। राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने मामले की जांच का आदेश मंडलायुक्त (कमिश्नर) को दिया है। उन्हें एक माह में रिपोर्ट शासन को भेजनी है। इमरजेंसी के मुख्य चिकित्साधिकारी (सीएमएस) डॉ. एके श्रीवास्तव को निलंबित करने और प्राचार्य डॉ. गणेश कुमार से स्पष्टीकरण मांगने से मेडिकल कॉलेज में हड़कंप की स्थिति है।

मंगलवार को मेडिकल कॉलेज में चारों तरफ इसी की चर्चा रही। जबकि कार्रवाई दर कार्रवाई ने डॉक्टरों के भी हाथ–पांव फुला दिए हैं। गायनी से लेकर एसआईसी कार्यालय तक में माहौल तनावपूर्ण है। प्राचार्य डॉ. गणेश कुमार ने बताया कि जांच समिति ने कई पहलुओं पर जांच की है। जो भी आरोप लगे हैं, उनका सिलसिलेवार जवाब दिया जाएगा।

यह है मामला

शिक्षक विधायक ध्रुव कुमार त्रिपाठी के बड़े भाई की पुत्रवधू चंदा त्रिपाठी की मौत 22 जुलाई को बीआरडी मेडिकल कॉलेज में हुई थी। मामले की शिकायत शिक्षक विधायक ने उपमुख्यमंत्री व स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक से की थी। आरोप लगाया था कि बेलहरा गांव निवासी मेरे भाई संदीप त्रिपाठी की पत्नी चंदा त्रिपाठी को 22 जुलाई को बीआरडी मेडिकल कॉलेज में इलाज के लिए लेकर आए थे। मरीज की गंभीरता को दरकिनार करते हुए डॉक्टर उसे एक वार्ड से दूसरे वार्ड में दौड़ाते रहे। इस संबंध में कई बार प्राचार्य को फोन किया गया, लेकिन फोन नहीं उठा। इलाज नहीं मिलने की वजह से चंदा की मौत हो गई। शिकायत पर स्वास्थ्य महानिदेशक चिकित्सा शिक्षा ने एसजीपीजीआई और केजीएयमू के डॉक्टरों की देखरेख में जांच कमेटी बना दी है। कमेटी को 31 अगस्त तक रिपोर्ट सौंपनी है।

झाल–मजीरे की धुन पर गाकर गणित पढ़ा रहे गुरुजी

गणित के सवाल देखकर ज्यादातर बच्चों का दिमाग चकरा जाता है। अंक गणित, बीज गणित के सूत्र, रेखा, त्रिभुज, अनंत रेखा, कोण, चतुर्भुज की जटिलता बच्चों को अक्सर उलझन में डाल देती है। बच्चों की इस उलझन को दूर करने के लिए एक सरकारी स्कूल के शिक्षक ने अनूठा फार्मूला तैयार किया है। वह झाल–मजीरा के साथ गाकर बच्चों ये सूत्र समझा रहे हैं। उनका ये अनूठा तरीका शिक्षकों के विभिन्न ग्रुप पर वायरल भी हो रहा है। पिपरौली ब्लॉक के प्राथमिक विद्यालय, चनऊ में सहायक अध्यापक के रूप में तैनात आशुतोष कुमार गुप्ता ने बताया कि पिछले छह महीने से वह इस तरीके पर कार्य कर रहे हैं। वर्ष 2020 में 69 हजार शिक्षकों की भर्ती के अंतर्गत उन्हें विद्यालय पर तैनाती मिली। पढ़ाने आए तो बच्चों में गणित के प्रति बेरुखी नजर आई। पूछने पर बच्चों ने बताया कि गणित के सूत्र उलझन में डालते हैं। इससे निजात में उन्हें शिक्षकों के विभिन्न ग्रुप से जुड़ने का फायदा मिला। एक ग्रुप में उन्होंने दूसरे प्रदेश में शैक्षणिक गतिविधियों पर तैयार गीतों को देखा। बस फिर क्या था, राह मिल गई।

गणित के विभिन्न सूत्रों को गीतों में पिरोया और बच्चों को गाकर पढ़ाने लगे। रुचि जगाने के लिए बाद में वाद्य यंत्रों को भी शामिल कर लिया। अब वह गणित पढ़ाने के लिए ज्यादातर इसी विधा का इस्तेमाल कर हैं। उनके पढ़ाने का तरीका गोरखपुर के शिक्षकों में वायरल हो रहा है। लोग विद्यालय पर आकर पढ़ाने की इस तकनीक को देख रहे हैं। खेल–खेल में बच्चे भी उत्साह से गतिविधियों को सीख रहे हैं। आलम यह है कि जो बच्चे गणित में काफी कमजोर थे, अब वे अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। इस प्रयोग का बेहतर परिणाम देखकर विद्यालय में अब सामान्य ज्ञान, हिंदी समेत अन्य विषयों को भी गीतों के माध्यम से पढ़ाने का सिलसिला शुरू किया गया है। आशुतोष कुमार गुप्ता के प्रयास को सफल बनाने में प्रधानाध्यापक ऊषा सिंह, सहायक अध्यापक दिनेश श्रीवास्तव, रेखा ओझा, सरिता रानी और शिक्षामित्र मधु श्रीवास्तव और अंजना यादव भी अपना योगदान दे रही हैं। तैनाती के बाद आशुतोष ने बच्चों के लिए विद्यालय में कॉपी बैंक की स्थापना भी की। कॉपी और पेंसिल न होने पर बच्चा यहां से ले सकता है। फिर, जब उसके पास प्रबंध हो जाएगा, तो नई कॉपी और पेंसिल बैंक में जमा करा देगा।

निकाय चुनाव के हार–जीत में आधी आबादी की भी रहेगी बराबर भागीदारी

नगर निकाय चुनाव में प्रत्याशियों का भविष्य तय करने में महिला वोटरों की भी लगभग बराबर भूमिका रहेगी। नगर निकाय के 13.45 लाख वोटरों में 7.32 लाख पुरुष तो 6.12 लाख महिला वोटर हैं। सिर्फ नगर निगम की बात करें, तो कुल 10.28 लाख वोटरों में करीब 40 फीसदी महिला वोटर हैं। इनमें 5.65 लाख पुरुष और 4.62 लाख महिला वोटर है।

18 नवंबर को मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन हो चुका है। हालांकि अभी आरक्षण का निर्धारण नहीं हुआ है, लेकिन दावेदार अपने तयी गणित बैठा रहे हैं। कुछ तो आश्वस्त हैं कि उनकी गणित के मुताबिक ही उनके वार्ड के आरक्षण की घोषणा होगी। इस महीने के आखिरी सप्ताह तक वार्डों के आरक्षण के निर्धारण का काम पूरा हो जाने की उम्मीद है। नगर निगम के 80 समेत पूरे नगर निकाय में कुल 256 वार्ड हैं। कुल 1175 बूथ बनाए गए हैं, जिनमें नगर निगम में सर्वाधिक 815 बूथ हैं।

सामाजिक इंसाफ मोर्चा संगठन की हुई मासिक बैठक हुई सम्पन्न

मऊ आइमा । सामाजिक इंसाफ मोर्चा संगठन की मण्डल मासिक बैठक मण्डल कार्यालय मऊ आइमा में महासचिव उस्मान खान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यक्रम का संचालन मण्डल महासचिव सूबेदार हारून द्वारा किया गया । जिसमें महगाई, भ्रष्टाचार, किसानों के लिए खाद व बीज ,बिजली, पानी, सड़क शिक्षा,स्वास्थ आदि अन्य बातों पर चर्चा की गई । अंत में संगठन के संस्थापक साजिद अली सभी को लोगों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अलग अलग इलाकों में चौपाल लगाकर लोगों की समस्याओं का निराकरण करने का प्रयास किया जायेगा । इस मौके पर प्रदेश सचिव बब्बू खान, मोबीन अहमद, सफीक, एहमद, दिलशाद ,वारिश अली, समापन हाजी समेत अन्य उस्मान पदाधिकारी उपस्थित रहे।

माननीय उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य जी का प्रयागराज आगमन

प्रयागराज, भाजपा मीडिया प्रभारी राजेश केसरवानी ने जानकारी देते हुए बताया कि दिनांक 23 नवंबर को दोपहर 2:00 माननीय उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य जी का प्रयागराज आगमन होगा तत्पश्चात पार्टी के पदाधिकारियों एवं विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक करेंगे और दोपहर 3:30 बजे के विधायक सुरेंद्र चौधरी जी के आवास सोंराव, पूर्व विधायक विक्रमाजीत मौर्य जी के आवास फाजलाबाद, तत्पश्चात पार्टी के कार्यकर्ता राजकुमार वर्मा के आवास चक मुंडेरा, तत्पश्चात विधायिका निर्मला पासवान जी के आवास अशोक नगर, तत्पश्चात विधायक के पी श्रीवास्तव जी के आवास जॉर्ज टाउन, पूर्व जिला अध्यक्ष गंगा पार युवा मोर्चा अनिरुद्ध पटेल जी के आवास सोहबतिया बाग तदोपरांत प्रदेश कार्यसमिति सदस्य मृत्युंजय तिवारी जी के आवास बक्शी बांध पर जाएंगे इसके अलावा 24 नवंबर को परेड ग्राउंड में माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के कार्यक्रम के अनुसार महाकुंभ 2025 एवं आगामी माघ मेला 2023 के संदर्भ में की गई समीक्षा बैठक में शामिल होंगे

राम सजीवन सिंह विधि महाविद्यालय जयंतीपुर कौशांबी में वितरण किया गया स्मार्ट फोन

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कालेजों में अध्ययनरत युवाओं के तकनीकी सशक्तिकरण हेतु स्मार्ट फोन वितरण योजना के तहत, जयंतीपुर कौशांबी स्थित ष्राम सजीवन सिंह विधि महाविद्यालय श में छात्र , छात्राओं को 92 स्मार्ट फोन वितरण किये गयें, मुख्य अतिथि माननीय संदीप मिश्र ब्लॉक प्रमुख नेवादा द्वारा स्मार्ट फोन प्रदान किया गया। स्मार्ट फोन पाकर छात्र और छात्राओं के चेहरे खिल उठे। आज के युग में बच्चों को डिजिटल से जोड़ना बेहद जरूरी है इस स्मार्टफोन स्मार्ट फोन से बच्चों को बेहतर शिक्षा प्राप्त करने में सहूलियत होगी इस योजना से ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं का तकनीकी ज्ञान का स्तर अच्छा होगा। स्मार्ट फोन वितरण करते हुए कॉलेज के ने छात्रो को सम्बोधित करते हुये कहा कि राज्य सरकार द्वारा लाई गई इस योजना की प्रसंशा करतें हैं यह योजना निश्चित छात्रों की पढाई में मदद करेगी । इससे हमारे देश के होनहार बच्चों का भविष्य बेहतर होगा। आज के युग में बच्चों को डिजिटल से जोड़ना बेहद जरूरी है इस स्मार्टफोन टेबलेट से बच्चों को बेहतर शिक्षा प्राप्त करने में सहूलियत होगी। इस मौके पर राम सजीवन सिंह विधि महाविद्यालय के प्रबंधक डॉक्टर सूबेदार सिंह एवम सम्मानित शिक्षक उपस्थित रहें.

अधिवक्ता समाज का महत्वपूर्ण अंग है– गणेश केसरवानी

विधि प्रकोष्ठ महानगर प्रयागराज के महानगर संयोजक जयवर्धन त्रिपाठी के नेतृत्व में भाजपा अध्यक्ष गणेश केसरवानी जी ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में व्यापक जनसंपर्क का अभियान चलाया जहां पर वह वरिष्ठ अधिवक्ताओं व युवा अधिवक्ताओं के बीच उपस्थित होकर 24 नवंबर को योगी आदित्यनाथ जी द्वारा संबोधित प्रबुद्ध सम्मेलन में आने हेतु सभी को निमंत्रण दिया और कहा कि अधिवक्ता समाज के प्रबुद्ध वर्ग के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में कार्य करता है अधिवक्ता समाज को एक सही दिशा में ले जाने के लिए हमेशा कार्य करता रहता है वरिष्ठ अधिवक्ताओं में बार के अध्यक्ष राधाकांत ओझा जी ने अपने पदाधिकारी कक्ष में सभी का स्वागत किया व कहा की बड़ी संख्या में अधिवक्ता इस प्रबुद्ध सम्मेलन में उपस्थित रहेगा हाई कोर्ट कैंटीन में वरिष्ठ अधिवक्ता अमरेंद्रनाथ सिंह राकेश पांडे बबुआ अशोक खरे शशिनंदन सिंह आदि सभी ने गणेश केसरवानी व जयवर्धन त्रिपाठी के कार्यों की सराहना की कार्यक्रम में मुख्य रूप से अरविंद सिंह देवेंद्र नाथ मिश्रा अखिलेश मिश्रा राजू पाठक राजेश केसरवानी शक्ति सिंह जितेंद्र सिंह शिवानु मिश्रा आंचल ओझा श्याम प्रकाश पांडे आनंद द्विवेदी डीएन त्रिपाठी विनोद पांडे जयंत श्रीवास्तव हिमांशु द्विवेदी सोमेश नीतीश अभिजीत वीरेंद्र तिवारी अखिलेश ओझा सुरेंद्र मिश्रा नीरज त्रिपाठी सत्यम पांडे अमित दुबे संजय मिश्रा सत्यवान सिंह विभूति त्रिपाठी शैलेश पांडे राजकुमार मिश्रा आदि सैकड़ों की संख्या में अधिवक्ता उपस्थित रहे कार्यक्रम का संचालन महानगर संयोजक विधि प्रकोष्ठ जयवर्धन त्रिपाठी द्वारा किया गया

इसके अलावा प्रबुद्ध सम्मेलन के सफल बनाने के लिए भारतीय जनता पार्टी प्रयागराज महानगर के द्वारा मंडल स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया जिसमें हजारों की संख्या में बुद्धिजीवी वर्ग भाग लिया और उन्होंने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए संकल्प लिया

मंडल की बैठक में मुख्य रूप महानगर मंडल मोर्चा प्रकोष्ठ प्रकल्प के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे

मुख्यमंत्री के जनसभा में प्रबुद्ध वर्ग के सहभागिता हेतू यमुनापार के भाजपाइयों ने बैठक कर बनाई योजना

प्रयागराज 23 नवम्बर 2022। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन में गुरुवार को प्रयागराज आगमन को लेकर भारतीय जनता पार्टी यमुनापार जिलाध्यक्ष विभव नाथ भारती ने यमुनापार के बीसों मंडलों व नगरपंचायत में प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन को लेकर योजना बैठक के बाद जिला कार्यालय सिविल लाइंस प्रयागराज में जिला पदाधिकारियों और वरिष्ठो संग बैठक कर अंतिम रूप दिया। भाजपा यमुनापार जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी ने बताया कि प्रत्येक मंडल से एक हजार पाचं सौ की संख्या सभा में पहुचाने की योजना रचना बैठक में बनाई गई। जिसमे यमुनापार के 1558 बूथों से 15–15 प्रबुद्ध वर्ग के अधिवक्ता, शिक्षाविद्, डाक्टर,व्यापारी, पत्रकार आदि प्रबुद्ध वर्ग नागरिकों के पहुंचने की योजना बनाई। वही यमुनापार के शंकरगढ़–केशवंमारतगंज,सिरसा नगरपंचायत के प्रत्येक बूथो से 30–30 की संख्या सुनिश्चित करते हुए वाहन प्रमुखों के साथ छोटे–छोटे वाहनों व बसों से प्रवुध्द वर्ग के लोगों की आने की व्यवस्था बना ली है। जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जो विकास की गंगा बहाई है और जो आगे विकास करने वाले हैं उसे प्रवुध्द वर्ग सुनकर जनता को जागरूकता करेंगे। नगरपंचायत के प्रत्येक वार्ड में विकास के लिए हर–हाल में कमल खिलाने का कार्य करेंगे। जनता जागरूक योगी मोदी के कार्यो की जो मुरीद है, कार्यकर्ताओ को केवल याद दिलाने की जरूरत है। बैठक मे प्रदेश परिषद सदस्य विभूति नारायण सिंह,जिला उपाध्यक्ष अशोक पांडेय,ज्ञान सिंह पटेल,राजेश्वरी तिवारी,विजय शंकर शुक्ल,जिला मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार चतुर्वेदी,कमलेश त्रिपाठी,जिलाध्यक्ष किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष अरुण सिंह,युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष सुधाकर पांडेय,अनूसूचित मोर्चा जिलाध्यक्ष राजमणि पासवान,कुलदीप सिंह पटेल,आदेश सिंह,हरीनारायण त्रिपाठी,सुरेन्द्र पटेल आदि के साथ भारी संख्या मे कार्यकर्ता पदाधिकारी उपस्थित रहे।

नई बाजार मोड़ के पास खुले नाला दुघर्टना को दे रही दावत

नैनी, प्रयागराज। एडीए मोड़ नई बाजार के पास बने नाला खुले होने की वजह से दुघर्टना होने की सम्भावना बनी हुई है। स्थानीय लोगो ने इसकी शिकायत नगर निगम के उच्चाधिकारियों को दी मगर खुला नाला का मरम्मत नही हो सका। बता कि नैनी के एडीए मोड़ नई बाजार के समीप आठ फिट के बने वाले जो कि खुला हुआ है। आये दिन वहां से गुजरने वाले राहगीर चुटहिल होते है। लोगो ने बताया खुले नाला के पास गंदे मलवा पड़ा है। नाला नही ढकने की वजह से वहां पर गंदगी का अंबार लगा हुआ है। गंदगी की वजह से कई प्रकार की गंदगी उत्पन्न हो रही है। नई बाजार के सरजू सिंह ने बताया कि नगर निगम मे हर बार शिकायत किया पर विगत वर्षों से आज तक कार्रवाई नही हो सका। एडीए मोड़ नई बाजार के एसके सिंह, कुलदीप चौरसिया, श्यामू पाल, दिनेश, राजेश, हवलदार सिंह आदि ने साफ सफाई और खुले नाला कि मरम्मत कराने की मांग की है।

मा0 मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी का प्रयागराज भ्रमण कार्यक्रम

मा0 मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ जी दिनांक 24 नवम्बर, 2022 को अपरान्ह 01:50 बजे परेड ग्राउण्ड, प्रयागराज आयेंगे। तत्पश्चात मा0 मुख्यमंत्री जी अपरान्ह 02:00 बजे से अपरान्ह 03:30 बजे तक परेड ग्राउण्ड में प्रबुद्ध जन सम्मेलन एवं जनपद की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास करेंगे। मा0 मुख्यमंत्री जी अपरान्ह 03:30 बजे से अपरान्ह 03:45 बजे तक मा0 जनप्रतिनिधियों से मुलाकात करेंगे। इसके उपरांत मा0 मुख्यमंत्री जी अपरान्ह 04:00 बजे से सायं 06:00 बजे तक मेला प्राधिकरण स्थित आईसीसीसी सभागार में आगामी कुम्भ मेला एवं माघ मेला के सम्बंध में समीक्षा बैठक करेंगे। तत्पश्चात मा0 मुख्यमंत्री जी सायं 06:25 बजे लखनऊ के लिए प्रस्थान करेंगे।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कृष्ण बिहारी अवस्थी वैद्य शास्त्री की 115वीं जयन्ती पर कृष्ण बिहारी उद्यान अशोक नगर में पुष्पांजलि, सम्मान समारोह एवं काव्य गोष्ठी का किया गया आयोजन

(मीनाक्षी सोनकर) कानपुर। आज पं. कृष्ण बिहारी अवस्थी स्मारक समिति के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्रद्धेय कृष्ण बिहारी अवस्थी जी ष्वैद्य शास्त्रीष की 115वीं जयन्ती पर कृष्ण बिहारी उद्यान अशोक नगर में पुष्पांजलि, सम्मान समारोह एवं काव्य समारोह आयोजित किया गया। वक्ताओं ने श्री अवस्थी के जीवन, देश सेवा, स्वतंत्रता के उपरांत समाजसेवा का वृतान्त सुनते हुए बताया कि काशी विद्यापीठ में अध्ययन करते हुए वह आचार्य नरेन्द्र देव के प्रिय शिष्य रहे और वहीं से आजादी के युद्ध मे कूद गए। नैनी, आगरा, फतेहगढ़, उन्नाव एवं कानपुर की जेलों में सजा काटी और आजादी के उपरांत 1952 लोकसभा की कांग्रेस से टिकट मिलने पर, चुनाव लड़ने से मना कर दिया और परिवार की दयनीय स्थिति के कारण उनके भरण पोषण में व्यस्त रहते हुए वैद्यक एवं समाजसेवा में लगे रहे। आयोजन में लोकसेवा मण्डल के अध्यक्ष श्री दीपक मालवीय का उत्साहजनक ष्मानव एवं जन सेवा सम्मानष से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत मे काव्य समारोह के द्वारा जाने माने कवियों ने लोगों को अपनी रचनाओं से मंत्रमुग्ध कर दिया और अपार तालियां बटोरी जिनमें प्रमुखरूप से डा. जहान सिंह, दिलीप दुबे, सुरेन्द्र गुप्त सीकर, सुरेश गुप्ता राजवंश, ध्रुव कुमार त्रिपाठी, अशोक शास्त्री, इरशाद कानपुरी, श्रवण शुक्ल रहे। इस मौके पर विधायक नीलिमा कटियार, महापौर पाण्डेय, पूर्व महापौर कैप्टन जगतवीर सिंह द्रोण, सलिल विश्नोई, भूधर नारायन मिश्र, राजेन्द्र मिश्रा बब्बू, सतीश निगम, संजीव दरियावादी, आनन्द शंकर गुप्ता, नमिता मिश्रा, कमल शुक्ल बेबी, राजू खण्डूजा, वीरेन्द्र चतुर्वेदी, विजय नारायण शुक्ला, पवन दीक्षित, सर्वेश कुमार पाण्डेय निन्नी, राकेन्द्र मोहन तिवारी, दीपक धावन, अशोक चन्द्र तिवारी, सूर्य कुमार शुक्ला, अतहर नईम, अवनीश सलूजा, जगदम्बा भाई आदि जन समूह के साथ उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

स्पेनिश सिने–इतिहास

हर देश में बहुत सारी कमियां–बुराइयां और समस्याएं होती हैं। कला–साहित्य का काम है इनके प्रति लोगों को जागरूक करना। सिनेमा भी इनको उजागर कर जनता को सचेत करती रहती है, मगर ऐसे काम सत्ता–शक्ति को पसंद नहीं आते हैं। वे भरसक इन्हें प्रतिबंधित करने का प्रयास करते हैं।

सचेत करने का ऐसा ही एक काम स्पेन के एक फिल्म निर्देशक ने किया और इसका परिणाम उसे भोगना पड़ा। स्पेन में 22 फरवरी 1900 को जन्मे लेखक–अभिनेता–निर्देशक सररियलिज्म के जनक लुई बुनुएल ने 1933 में एक फिल्म बनाई। उसने अपने देश के किसानों की भयंकर गरीबी का चित्रण अपनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'लैंड विथआउट ब्रेड' में किया। फिल्म ने हंगामा मचा दिया। वहां की सरकार ने 'स्पेन के लोगों के अच्छे नाम को बदनाम' करने के आधार पर तत्काल इस फिल्म को प्रतिबंधित कर दिया।

हालांकि 1936 में नई सरकार आने पर प्रतिबंध उठ गया। इसके पहले पेरिस में बुनुएल–सल्वाडोर डाली की दोस्ती का फलित थी– 1929 का 'एन अंडालुसियन डॉग', 17 मिनट की इस मूक फिल्म जैसा दिखाया गया है, तब तक फिल्म जगत ने कुछ नहीं देखा था, खासकर फिल्म के शुरुआती सीन में उस्तरे से आँख तराशना। आज भी यह दृश्य देखते हुए दर्शक हिल जाते हैं।

स्पेन में फिल्मों का शुरुआती दौर

स्पेन में शुरू से फिल्मों पर ग्रहण लगता आया। यहां फिल्म उद्योग बहुत छोटा था और 20वीं सदी के प्रारंभ में वहां सैनिक तानाशाही थी, अतरू 1923–30 के बीच इस क्षेत्र में खास उल्लेखनीय सिनेमा नहीं बना। 1931 में चुनाव हुए और फिल्म सवाक हुई तो वहां फिल्म उद्योग स्थापित करने का काम हुआ। कई बड़े प्रोडक्शन हाउस, वितरक आगे आए, लेकिन बुनुएल जैसे कई निर्देशक देश छोड़ कर हॉलीवुड जा चुके थे।

1939 से फ्रैंको का दमित शासन व्यवस्था में फिल्म बनाना और खुद को इस कला में व्यक्त करना असंभव था, परंतु 36 साल के बाद स्पैनिश सिनेमा ने विश्व को अपना सर्वोत्तम दिया। सरकार के नियंत्रण में नैतिक और राजनैतिक निर्देशों के अंतर्गत स्पेन में फिल्म बनाना कठिन था, लेकिन कलाकार रास्ता निकाल लेते हैं। जनरल फ्रैंको के आत्मकाथात्मक उपन्यास पर होसे लुई साइन डे हर्डिया ने 1942 में 'राजा' बनाई जिसे इस काल की स्पेन में बनी असाधारण फिल्म का दर्जा हासिल है।

प्रतिबंध के बावजूद अगले दशक में जुआन एंटोनिओ बैर्डेम एंव लुई गार्षा बेर्लैंगा ने मिल कर 1953 में आर्थिक संकट से घिरे कथानक पर 'दिस हैप्पी पेयर' निर्देशित की। लुई गार्षा बेर्लैंगा ने अमेरिका की अनुदान नीति का निंदनीय रूप 'मिस्टर मार्शल' में प्रस्तुत किया। उसने हास्य में लपेट कर कटु आलोचना करते हुए 'नॉट ऑन योर लाइफ' बनाई जिसे काफी काट–छांट के बाद परदे पर आने का अवसर मिला। बैर्डेम की 'देथ ऑफ ए साइकिलिस्ट' तत्कालीन स्पेन पर बड़ी कटु टिप्पणी है। इस फिल्म को कॉन समारोह में ग्रॉन पी मिला।

इसके बाद बैर्डेम ने एक फिल्म प्रड्यूस की जिसे निर्देशित करने के लिए 29 साल के बाद बुनुएल अपने देश स्पेन लौटा। 1961 की 'विरिडिआना' एक युवा नर्स की कहानी है जो अपने फाइनल वाऊ के पहले मदर सुपीरियर के अनुरोध पर अपने विधुर अंकल से मिलने जाती है।

'हेल्मा' उपन्यास पर आधारित फिल्म कैथोलिक चर्च की मानसिकता तथा उसके रीति–रिवाजों पर आक्रमण है। नतीजा वही हुआ जिसकी कल्पना की जा सकती है, फिल्म स्पेन में प्रतिबंधित हो गई। बुनुएल पुनरू बाहर चला गया और बहुत बाद में करीब एक दशक बाद एक बार फिल्म 'ट्रिस्टाना' (1970) बनाने स्पेन लौटा।

कार्लोस सौरा ने स्पैनिश गृह युद्ध और उसके बाद के समय पर 'द हंट' बनाई जिसमें फ्रैंको के शासन की खुल कर आलोचना की गई, साथ ही बूर्जुआ, चर्च, सेना तथा यौन निषेधों की आलोचना भी इसमें है। उसने इसमें पहली बार अपनी होने वाली पत्नी जेराल्डाइन चौपलिन को अभिनय का अवसर दिया है। आगे चल कर कार्लोस सौरा ने बाल अभिनेत्री आना टोरेंट को लेकर आठ पुरस्कार प्राप्त हुए। बाद में अनूठी आना टोरेंट ने 'द स्पिरिट ऑफ द बीहाइव' में काम किया।

1973 की 'द स्पिरिट ऑफ द बीहाइव' का निर्देशन विक्टर एरिस ने किया था। विक्टर एरिस ने अपने तीन दशक के फिल्मी जीवन में मात्र तीन फिल्में बनाई। 'द स्पिरिट ऑफ द बीहाइव' के अलावा 'एल सुर' एवं 'क्विन्स ट्री ऑफ द सन' उसकी दो अन्य फिल्में हैं। उसकी ये फिल्में सिने–कला का बेहतरीन उदाहरण हैं। ऐसा नहीं था कि केवल स्पेन के निर्देशक ही स्पेन में फिल्म बना रहे थे। इटली के निर्देशक मार्को फेरेरी ने स्पेन में एक ब्लैक कॉमेडी फिल्म 'द व्हीलचेयर' बनाई।

स्कैन्डेवियन सिने–इतिहास

स्कैन्डेवियन देशों का भूगोल जानना आवश्यक है। जिसे हम स्कैन्डिनेविया कहते हैं, यह उत्तरी यूरोप का एक इलाका है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका नाम स्कैन्डिया था। नॉर्वे तथा स्वीडन देश स्कैन्डिनेविया प्रायद्वीप के इलाके हैं, जिसमें डेनमार्क भी जुड़ा हुआ है। कुछ लोग फिनलैंड, आइसलैंड तथा फैरोए टापुओं को भी इसमें शामिल करते हैं, क्योंकि ये हिस्से भाषा की दृष्टि से नॉर्वे तथा स्वीडन से जुड़े हुए हैं। यहां के लोग समान भाषा का

उपयोग करते हैं। डेनमार्क, फिनलैंड, आइसलैंड, नॉर्वे तथा स्वीडन देशों को एक समूह में रखा जाता है और इन्हें नॉर्डन संज्ञा से पुकारा जाता है। इन देशों में एक–दूसरे से काफी समानताएं हैं तथा ये देश यूरोप के अन्य देशों से काफी भिन्न हैं। ये कई मामलों में यूरोप से भिन्न हैं, जैसे इनकी जनसंख्या बहुत विरल है, इनकी मुख्य संपदा मछली है और इनके लोगों की आयु बहुत लंबी होती है, साथ ही यहां की साक्षरता दर बहुत ऊंची है।

विरल जनसंख्या के बावजूद इन देशों ने बीसवीं सदी के दूसरे दशक में सिनेमा के उद्भव में काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। हालांकि इस काल में यूरोप के अन्य देशों की तुलना में इनका आर्थिक स्थान बहुत ऊंचा नहीं था। फिर भी सिनेमा कला तथा सिने–उद्योग में इनका योगदान उल्लेखनीय है। इनके योगदान को दो हिस्सों में देखा जाता है। पहला चरण 1910 से 1913 का है, इस चरण में चार साल में डेनमार्क की प्रोड्कशन कंपनी 'नोर्डिक फिल्म' ने अंतरराष्ट्रीय सफलता पाई और दूसरे चरण में 1917–1923 के बीच स्वीडन को इस क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सफलता हासिल हुई।

डेनिश एवं स्वीडिश सिनेमा का जुड़ाव

मजे की बात, सफलता का एक राज यह भी है कि स्कैन्डिनेवियन मूक सिनेमा ने स्थानीयता पर जोर नहीं दिया, उसके केंद्र में वृहतर यूरोपियन संदर्भ थे। इसी कारण करीब दस साल डेनिश एवं स्वीडिश सिनेमा रूसी तथा जर्मन सिनेमा से भी जुड़ा रहा। उनका साथ–साथ विकास हुआ। वे वितरण और आदान–प्रदान में भी एक रहे। यहां तक कि इनके निर्देशक एवं तकनीकि विशेषज्ञ भी एक–दूसरे के यहां आते–जाते रहे। सहयोग के इस नेटवर्क में उत्तरी यूरोप के दूसरे देशों की भूमिका नाममात्र की थी।

आइसलैंड जो डेनमार्क का हिस्सा था, वह 1918 तक एक फिल्म थियेटर के भरोसे रहा। इस हॉल को 1906 में एल्फरेड लिंड ने खोला था। लिंड आगे चल कर सिने–निर्देशक भी बना। फिनलैंड का अपना स्वतंत्र भाषाई सिनेमा था जो 1917 तक जार के रूस से जुड़ा रहा। नॉर्वे की पहली फीचर फिल्म 'द पेरिल्स ऑफ फिशिंगरू ए ड्रामा ऑफ द सी' थी और 1918 तक नॉर्वे ने सत्रह फिल्में बनाई।

अगर स्कैन्डेवियन सिने–इतिहास में तनिक और पीछे जाएं तो यहां पहली बार चलती–फिरती तस्वीरें 1896 में 6 अप्रैल को प्रदर्शित हुई थीं। यह शुभ कार्य उस समय के क्रिस्टिआनिआ (जिसे आज ओस्लो के नाम से जाना जाता है) के वैरायटी क्लब में हुआ था। यह प्रदर्शन मैक्स तथा एमिल स्क्लाडनोव्स्कीद् दो जर्मन भाइयों द्वारा किया गया था। इरादा था एक शो का मगर सफलता का आलम यह रहा कि वे अपने बायस्कोप उपकरण के साथ 5 मई तक यह काम करते रहे।

आग में जल गए सारे उपकरण

Ms uekdZ ds ,d m| kxi fr] l ekt l sh fp=dkj foYge gS ¼1843&1912½us7 t w 1896 dks; g dke fd; k] ml us dks sugxu esa ydfe; j fl usekVkxkQ ,d ydMh dsi ofy; u ij yxk; k vkS dks pyr&fQjrs fp=ksa dh çn'kZuh dh A ndkZ; l s ,d Ofä dhbZ;Zkdk f'kdkj gksdj l kjs midj.kvkx dhHksVp<+ x, A vl y esa ,d by sDVªk; u dksukSjh l sfudky fn; kx; k Fkk vkS ml us bl rjg viuk cnyk fy; k FkkA ysfdu foYge Hkh ,d gh ft íhOfä Fkkml us[kw

विज्ञापन और शोर–शराबे के साथ शो को फिर चालू किया। उसका शो देखने राजसी परिवार भी आया था।

फिनलैंड में 16 मई को पहली बार ये तस्वीरें पहुंचीं। हेल्सिंकी के टाउन हाल में ये मात्र आठ दिन टिकीं। कारण था, शहर की आबादी का कम होना और टिकट का मूल्य अधिक होना। ये आठ दिन 28 जून से शुरू हुए और जल्द समाप्त हो गए। मगर इतने ही दिनों में फोटोग्राफर कार्ल एमिल स्टाबर्ग को इसकी धुन सवार हो गई और उसने जनवरी 1897 से लुमियर फिल्म्स का वितरण प्रारंभ कर दिया।

हेल्सिंकी के बाहर ऑस्कर अलोनेन ने यही काम शुरू किया और 'लीविंग पिक्चर्स' लोगों तक पहुंचने लगीं। 1904 में कार्ल एमिल स्टाबर्ग ने फिनलैंड में स्थाई सिनेमा 'अराउंड द वर्ल्ड' स्थापित किया।

28 जून 1896 को मालमो में उद्योग मेला–प्रदर्शनी लगी और स्वीडन में पहला प्रोजेक्शन लगा। इस बार लुमियर सामग्री का प्रबंध किया डैनिश शोमैन हैराल्ड लिम्फिल्ड ने। जल्द ही सिनेमेटोग्राफ उत्तर में फैल गया। इसका श्रेय जाता है पेरिस डेली पत्रिका 'के सोइर' के एक पत्रकार चार्ल्स मार्शल को। उसने 21 जुलाई को एडीसन काइनेटोस्कोप की सहायता से स्टॉकहोम के विक्टोरिया थियेटर में यह काम पहली बार किया। बहुत सफलता न मिलने के कारण जल्द ही एडीसन के उपकरण को स्कालडानोवस्की भाइयों ने स्थानांतरित कर दिया, उन्होंने स्वीडन में कुछ चलते–फिरते चित्र खींचे और उन्हें प्रदर्शित किया।

हेल्सिंकी का सिनेमा से जुड़ाव

1911 में हेल्सिंकी में 17 सिनेमा हॉल थे और पूरे देश में 81 थियेटर थे। दस साल बाद 1921 में यह संख्या हेल्सिंकी में 20 पहुंच गई और पूरे देश में यह संख्या बढ़ कर 118 हो गई। 1907 में पहली फिनिश फिक्शन फिल्म 'बूटलेगर्स' नाम से बनी। 1913 में पुरो निर्देशित फिनिश फिक्शन फिल्म 'सिल्वी' का टुकड़ा आज भी बचा हुआ है जिसे उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

एरिक एस्टलैंडर ने 'फिल्लैंडिया फिल्मी' की स्थापना की और 1912–1916 के बीच 49 फिल्में बनाई जिनमें देश के सुदूर उत्तर में फिल्माई गई कुछ शॉर्ट फिल्में भी शामिल थीं। यलमार वी. पोजायहेमो ने 1910 से कई सिनेमा हाल लिए और जल्द ही वह प्रोडक्शन भी करने लगा।

प्रायद्वीप की जनसंख्या कम होने के बावजूद दुनिया का सिने–इतिहास बिना स्कैन्डेवियन देशों के सिने–इतिहास के पूरा नहीं हो सकता है।

शांग ईमो– राही प्यार के

श्प्रेमश साहित्य और फिल्मों का सर्वाधिक प्रिय विषय रहा है। अनगिनत भाषाओं में प्रेम पर अनगिनत फिल्में बनी हैं, आगे भी बनेंगी। प्रेम पर 'द रोड होम' जैसी फिल्म कदाचित बनती है। सरल–सीधी कहानी जिसे बहुत प्रेम के साथ सुनाया–दिखाया गया है और बहुत प्रेम के साथ बनाया गया है। जिसे बहुत प्रेम के साथ देखा और सराहा जा सकता है। रंगों की भरमार वाली यह प्रेम कथा अद्भुत है। कितनी तो नाजुक और प्यारी है यह प्रेमिका जो बहुत समय एकांतिक प्रेम करती है।

निष्ठावान युवती जो ताजिंदगी अपना गांव नहीं छोड़ती है मगर शहर के प्रेमी के लिए सारी परम्पराओं को तोड़ती है। पहली दृष्टि में होने वाले प्रेम की इस परिकथा जैसी कहानी में पति के मरने के बाद यही लड़की जो अब बूढ़ी हो चुकी है, पति का शव गाड़ी पर न लाकर, परम्परागत तरीके से वापस अपने गांव लाकर दफनाना चाहती है, ठीक उसी जगह जहां से वह अपने प्रेमी को देखा करती थी। पहले उसने कुंआरी लड़की के रूप में स्कूल के लिए लाल बैनर तैयार किया था और अब बुढ़ापे में पति के लिए कफन बनाने करघा पर बैठी है।

शहर से उसका बेटा लोओ युशंग (होन्गलेई सन) अपने स्कूल टीचर पिता (शेंग हाऊ) की मृत्यु पर गांव आया है, वहां आकर वह मां की जिद देखता है और फिर पूरी कहानी यानी उसके माता–पिता की प्रेम कहानी रंगारंग फ्लैशबैक में दिखाता–सुनाता है। अट्ठारह साल की गांव की एक लड़की शो डी (शएंग जियी की पहली फिल्म) मौसम की परवाह न करते हुए अपने प्रेम को पोसती है और यह प्रेम फलित होता है।

नायिका शो डी जैसी मासूमियत शायद ही किसी विश्व प्रसिद्ध नायिका में नजर आए। फिल्म का अंत आपकी आंखें नम कर देता है, साथ ही सिनेमेटोग्राफी (यंग हाउ) आपको फिल्म के प्रेम में डाल देती है। एक ओर वर्तमान बर्फीले मौसम के लिए सफेद–भूरा है तो दूसरी ओर गर्माहट भरा रंगीन अतीत है।

प्रकृति का इतना खूबसूरत फिल्मांकन बड़े परदे पर देखने में पूरा आनंद देगा। मगर मुझे छोटे परदे पर ही देख कर संतोष करना पड़ा। पूरे समय सैन बाओ का संगीत फिल्म के मूड को उभारता है। अगर चीनी शीर्षक का ज्यों–का–त्यों अनुवाद करें तो फिल्म का नाम होगा, 'माई फादर एंड मदर'। शी बाओ ने अपने उपन्यास 'रिमेंबरेंस' की पटकथा भी तैयार की। फिल्म 'द रोड होम' ने विभिन्न श्रेणी में 19 पुरस्कार अपनी झोली में किए।

फिल्म निर्देशक शांग ईमो इस फिल्म के निर्देशक शांग ईमो कमाल के हैं। उन्होंने टीवी फिल्म, डॉक्यूमेंट्री के साथ 'रेज द रेड लैंटर्न', 'रेड सोगम', 'द ग्रेट वॉल', 'कमिंग होम', 'अंडर द हॉथर्न ट्री', 'कर्स ऑफ द गोल्डेन फ्लोवर', 'हीरो', 'नॉट वन लेस', 'कीप कूल' आदि फिल्मों का निर्देशन किया। उन्होंने कुछ फिल्मों में अभिनय भी किया, प्रड्यूसर और सिनेमाटोफ्रर भी रहे हैं।

14 नवम्बर 1951 को चीन में जन्मे शांग ईमो चीन के ग्रामीण जीवन को उकेरने के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने बीजिंग की फिल्म अकादमी से प्रशिक्षण लिया है और चीन की पांचवीं पीढ़ी के निर्देशक माने जाते हैं। पांचवी पीढ़ी के निर्देशकों ने चीन के कल्चरल रिवोल्यूशन के बाद फिल्में बनाई हैं। जब

वे 16–26 साल के थे तब यह आंदोलन हुआ था। उस समय उन्होंने कई भयंकर और त्रासद घटनाएं देखी।

वे इस काल से जुड़ी फिल्में बनाना चाहते थे, लोगों ने जो सहा था, जिस दारुण अवस्था से लोग गुजरे थे, उसकी बात करना चाहते थे। भाग्य और मानवीय संबंध को परदे पर लाना चाहते थे। सामाजिक कार्यों से जुड़े शांग ईमो कई फिल्म समारोह की ज्यूरी में रहे हैं।

कला का उद्देश्य राजनीति नहीं होता है, उनका कहना है कि राजनीति में उनकी रूचि नहीं है।

शांग ईमो की फिल्में

शांग ईमो दोनों तरह की फिल्में बनाते हैं– एक अपनी रुचि की फिल्में और दूसरी कमर्शियल फिल्में। 'हीरो' तथा 'हाउस ऑफ फ्लाइंग डैगर्स' उनकी कमर्शियल फिल्में हैं। वे बहुत सारी फिल्में बनाना चाहते हैं जिनमें दूसरों की कहानियां हैं और जो आत्मकथात्मक हैं। उनकी फिल्में कलात्मकता के लिए स्मरण की जाएंगी। मनुष्य की भावनाएं काल और स्थान के परे होती हैं, मानवीयता साझा होती है। अगर कोई फिल्म सार्वभौमिक मानवीय भावनाओं को स्पर्श करती है तो वह दर्शकों को अवश्य पसंद आती है। दर्शक ऐसी फिल्म का आनंद लेता है।

'द रोड होम' एक ऐसी ही फिल्म है। मनमाफिक फिल्म बनाने के कारण उन्हें अपने देश में प्रतिबंध का सामना करना पड़ा। उनकी दूसरी फिल्म 'रेज द रेड लैंटर्न' तथा तीसरी फिल्म 'रेड सोगम' बाहर खूब प्रशंसित हुई लेकिन विवाह संस्था की बुराई तथा स्त्री के शोषण की कहानियां होने के कारण इन्हें चीन में काफी समय तक प्रदर्शन की अनुमति नहीं थी।

आफताब पूनावाला के पॉलीग्राफ टेस्ट की प्रक्रिया पूरी

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने कहा कि श्रद्धा ने 2020 में पुलिस में जो शिकायत की थी वो पत्र मैंने देखा है। पत्र में बहुत गंभीर आरोप हैं। कार्रवाई क्यों नहीं की गई इसकी जांच की जाएगी। मैं किसी पर कुछ भी आरोप नहीं लगाना चाहता लेकिन

अगर ऐसे पत्र पर कार्रवाई नहीं होती है तो ऐसी घटनाएं होती हैं। अगर उस समय मामले का संज्ञान लेकर कार्रवाई होती तो शायद उसे बचाया जा सकता था।

पुलिस के मुताबिक, आफताब पूनावाला पुलिस को गलत जानकारी दे रहा है। पुलिस को संदेह है कि पूनावाला ने अपनी प्रेमिका श्रद्धा वाकर के मोबाइल फोन के साथ क्या किया और जिस आरी से उसने कथित तौर पर उसकी हत्या करने के बाद उसके शरीर को काट दिया, उसके बारे में गलत जानकारी देकर जांचकर्ताओं को गुमराह करने का प्रयास कर रहा है। लिहाजा अब नार्को टेस्ट के जरिए ही श्रद्धा की हत्या के राज को उसके सीने से बाहर निकालने की कोशिश की जाएगी।

सलाहकार टीम की मदद से केस में हर एंगल से जांच की जा रही है। एसीपी रमन लांबा कुछ समय पहले तक दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की आईएफएसओ में तैनात थे। हाल ही में उनका तबादला द्वारका जिले में किया गया है। उन्हें श्रद्धा हत्याकांड में सलाह देने के लिए दक्षिण जिला बुलाया गया है।

श्रद्धा हत्याकांड हाई–प्रोफाइल हो गया है। ऐसे में पुलिस इस केस की जांच में कोई कमी नहीं छोड़ना चाहती है। इस बात को ध्यान देखते हुए दिल्ली पुलिस की एसीपी रमन लांबा की देखरेख में तेजतर्रार चार इंस्पेक्टर की सलाहकार टीम बनाई गई है। ये टीम पूरे केस पर नजर रखे हुए है और महरौली पुलिस को लगातार सलाह दे रही है। आफताब का नार्को टेस्ट रोहिणी के डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर अस्पताल में किया जाएगा, इसके लिए दिल्ली पुलिस ने 50 सवालों की लिस्ट तैयार की है।

पुलिस सूत्रों का कहना है कि उसने शव के कितने टुकड़े किए और इन्हें कहां फेंका, उसका भी रफ नोट तैयार किया है। दिल्ली पुलिस ने कोर्ट में दाखिल रिमांड एप्लीकेशन में भी इस रफ नोट की बात लिखी है। इस नोट के आधार पर पुलिस जंगल में शव के टुकड़ों को जंगल में तलाश कर रही है।

दक्षिण जिला पुलिस अधिकारियों के अनुसार, आरोपी आफताब पूनावाला श्रद्धा के शव के टुकड़ों को हिसाब–किताब रखता था। इतना ही नहीं आरोपी ने हत्या की साजिश का पूरा रफ नोट तैयार किया है। इसमें उसने हर छोटी बात का जिक्र किया है।

श्रद्धा हत्याकांड में पुलिस ने खुलासा किया कि आरोपी श्रद्धा के शव के टुकड़ों व औजारों को फेंकने का भी हिसाब रखता था। यह खुलासा उसके फ्लैट से मिले एक रफ नोट से हुआ है। ये नोट आरोपी आफताब के छतरपुर स्थित फ्लैट से मिला है। दूसरी तरफ दिल्ली पुलिस ने श्रद्धा के सिर व धड़ के टुकड़े तलाश करने के लिए मंगलवार को भी तलाशी अभियान चलाया। हालांकि पुलिस को कोई सफलता हाथ नहीं लगी।

आफताब पूनावाला ने सबूतों को सोची–समझी साजिश के तहत खत्म किया है। उसने श्रद्धा के शव के टुकड़े करने में इस्तेमाल किए गए औजारों को इस तरह फेंका कि पुलिस बाद में उन्हें ढूंढ न सके। आरोपी ने आरी व ब्लेड को गुरुग्राम में डीएलएफ के पास जंगल में फेंका था। इसके अलावा चापड़ को उसने छत्तरपुर में 100 फुटा रोड पर कूड़े में फेंका था। दूसरी तरफ आफताब गुरुग्राम स्थित जिस कॉल सेंटर में नौकरी करता था, वहां अब वर्क फ्रॉम होम कर दिया गया है।

पॉलीग्राफ टेस्ट को सामान्य तौर पर लाई डिटेक्टर टेस्ट यानी झूठ पकड़ने की जांच भी कहा जाता है। इसमें आरोपी से कुछ सवाल पूछे जाते हैं और इस पर उसकी मनोवैज्ञानिक स्थिति का आकलन किया जाता है। सवाल पूछने के बाद आरोपी के ब्लड प्रेशर, दिल की धड़कन और नाड़ी की चाल को रिकॉर्ड किया जाता है और इसके आधार पर यह विश्लेषण किया जाता है कि उसने किस सवाल पर गलत और किस पर सही जानकारी दी है।

श्रद्धा ने दो साल पहले पुलिस से जताई थी हत्या की आशंका

देश के बहुचर्चित श्रद्धा वालकर हत्याकांड में नया खुलासा हुआ है। मीडिया रिपोर्ट्स में यह दावा किया जा रहा है कि श्रद्धा ने आफताब के खिलाफ दो साल पहले मुंबई पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी। श्रद्धा ने मुंबई पुलिस को पत्र लिखकर बताया था कि आफताब उसके साथ मारपीट करता है। अगर

समय रहते पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की तो वह उसकी हत्या कर देगा।

मुंबई की पालघर पुलिस को लिखी चिट्ठी में श्रद्धा ने बताया कि आफताब ने उसके साथ मारपीट की। उसका गला दबाकर मारने की कोशिश की। इतना ही नहीं आफताब ने धमकाया और ब्लैकमेल किया कि वह उसे जान से मारकर टुकड़े–टुकड़े कर फेंक देगा।

आरोपी आफताब पूनावाला ने सबूतों को सोची–समझी साजिश के तहत खत्म किया है। उसने श्रद्धा के शव के टुकड़े करने में इस्तेमाल किए गए औजारों को इस तरह फेंका कि पुलिस बाद में उन्हें ढूंढ न सके। आरोपी ने आरी व ब्लेड को गुरुग्राम में डीएलएफ के पास जंगल में फेंका था। इसके अलावा चापड़ को उसने छत्तरपुर में 100 फुटा रोड पर कूड़े में फेंका था। दूसरी तरफ आफताब गुरुग्राम स्थित जिस कॉल सेंटर में नौकरी करता था, वहां अब वर्क फ्रॉम होम कर दिया गया है। दक्षिण जिला पुलिस अधिकारियों के अनुसार, आरोपी आफताब ने बताया कि उसने आरी व ब्लेड को गुरुग्राम में फेंका था। ऐसे में पुलिस आरोपी को लेकर दो दिन गुरुग्राम के जंगल में तलाशी अभियान चला चुकी है, लेकिन पुलिस को कुछ नहीं मिला। आरोपी श्रद्धा के शव के टुकड़े करने के लिए महरौली बाजार से धारदार वाले तीन ब्लेड खरीदकर आया था। गुरुग्राम में एक–दो दिन बाद फिर तलाशी अभियान चलाया जाएगा।

श्रद्धा की हत्या के आरोपी आफताब अमीन पूनावाला को अपने किए पर अभी भी जरा भी पछतावा नहीं है। वह जांच और पूछताछ के समय भी अपने द्वारा किए गए अपराध पर पछतावा जाहिर करने के बजाय मुस्कुराता है।

नशे के लिए पैसे नहीं दिए तो मां बाप,दादी–बहन किसी को नहीं छोड़ा

दिल्ली के पालम इलाके में एक ही परिवार के चार लोगों की हत्या कर दी गई। एक ही परिवार के चार लोगों की हत्या होने से पूरे इलाके में सनसनी फैल गई। पुलिस ने हत्या के आरोपी केशव (25) को गिरफ्तार कर लिया है। केशव ने अपने मां–बाप, दादी और बहन की हत्या की है। शुरुआती जांच में सामने आया है कि केशव नशे का आदी है और वह इसके लिए परिजनों से पैसे मांग रहा था। मना करने पर उसने बेरहमी से उनकी हत्या कर दी। आरोपी को नशा मुक्ति केंद्र में भर्ती कराया था, परिजन हाल ही में उसे नशा मुक्ति केंद्र से लेकर आए थे।

जानकारी के मुताबिक, जब पुलिस ने घर के अंदर जाकर देखा तो वहां खून ही खून नजर आ रहा था।

युवक ने बहन की हत्या कमरे में की, उसका शव वहीं फर्श पर पड़ा था। दादी का शव कमरे में बिस्तर पर मिला। वहीं मां–बाप का शव बाथरूम में दिख रहा है। घर के अंदर बेडरूम से बाथरूम तक खून ही खून फैला हुआ है। आरोपी केशव (25) ने अपनी दादी दीवानो देवी (75), पिता दिनेश (50) मां दर्शना और बहन उर्वशी (18) की हत्या की।

बताया जा रहा है कि आरोपी नशा करता था और घर वालों से पैसे मांगता था। घरवालों ने पैसे देने से मना कर दिया तो उसने घरवालों की हत्या की साजिश रची। घर वाले अलग–अलग फ्लोर पर रहते हैं तो उसने सभी को अलग–अलग फ्लोर पर जाकर मारा है।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, रात करीब 11रू30 बजे सूचना मिली थी कि ऊपर वाले फ्लोर में चीखने

चिल्लाने की आवाज आ रही है। पुलिस मौके पर पहुंची तो चारों तरफ खून बिखरा हुआ था और चारों लोग लहूलुहान हालत में पड़े हुए थे। उनको अस्पताल ले जाया गया जहां डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पालम पुलिस ने केशव को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी केशव काफी समय से नशा करता था। वह गांजा पीता था। आए दिन घरवालों से पैसा मांगता था। रात को भी उसने सबसे पहले दादी से पैसे मांगे। दादी ने पैसे नहीं दिए तो उसने दूसरी मंजिल पर चाकू से गोदकर दादी की हत्या कर दी। इसके बाद उसने मां से मांगे। मां ने पैसे देने से मना कर दिया तो फिर मां की हत्या कर दी। इसके बाद उसने पिता और फिर सबसे आखिर में छोटी बहन उर्वशी की हत्या की। हत्या करने के बाद आरोपी भाग रहा था। चीखने चिल्लाने की आवाज के बाद चाचा जो कि पड़ोस में रहते हैं वह आए और आरोपी को भागते हुए पकड़ लिया।

आरोपी केशव कुछ समय पहले नौकरी कर रहा था उसके बाद नौकरी भी छूट गई। उसकी नशे की लत को लेकर लेकर परिवार वालों के साथ उसका झगड़ा होता था, केशव गाली गलौज करता था। रोज–रोज के इस झगड़े से वह तंग आ गया था। कुछ समय पहले उसका गर्लफ्रेंड से भी ब्रेकअप हुआ था, जिसकी वजह से भी वह परेशान भी था। रात को घर के सभी सदस्य जागे हुए थे जिसके बाद उसने वारदात को अंजाम दिया है एक एक करके मारा था।

मेवा और सलाद से लेकर मसाज तक,मिल रहा वीआईपी ट्रीटमेंट

तिहाड़ जेल में बंद दिल्ली सरकार में मंत्री सत्येन्द्र जैन को लेकर आए दिन सीसीटीवी फुटेज सामने आ रहे हैं। दुष्कर्म के आरोपी से मसाज का वीडियो आने के बाद अब एक नया वीडियो सामने आया है जिसमें सत्येन्द्र जैन जेल में मौज से फ्रूट और ड्राई फ्रूट खाते नजर आ रहे हैं। जैन ने जेल प्रशासन पर ठीक से खाना नहीं देने का आरोप लगाया है लेकिन तिहाड़ जेल के

अंदर जो तस्वीरें और वीडियो सामने आ रहे हैं वो इसके ठीक उलट हैं। जो वीडियो वायरल हुआ हैं उसमें सत्येंद्र जैन फल, कभी ड्राई फ्रूट तो कभी सलाद खाते नजर आ रहे हैं।

जानकारी के मुताबिक सत्येन्द्र जैन का जेल में वजन बढ़ गया है। जेल के सूत्रों के मुताबित सत्येन्द्र जैन का वजन 8 किलो बढ़ गया है। वहीं दूसरी तरफ जैन के वकीलों ने कोर्ट में कहा है कि उनका वजन 28 किलो तक कम हो गया है।

भाजपा ने आम आदमी पार्टी को आड़े हाथों लेते हुए जमकर निशाना साधा है। भाजपा ने वीडियो जारी करते हुए कहा कि ये जेल नहीं रिसॉर्ट लग रहा है। वहीं, इस वीडियो ने सत्येंद्र जैन के उस दावे पर सवाल खड़े कर दिए हैं जिसमें उन्होंने कहा था कि उन्हें सही से खाना नहीं दिया जा रहा है।

शनिवार को जेल में सत्येंद्र जैन की मसाज का एक वीडियो वायरल हुआ था जिसको लेकर भी जमकर सियासी घमासान मचा था। जेल की बैरक से एक वीडियो सामने आया था जिसमें एक शख्स उनको मसाज देता दिख रहा था। मामले में तिहाड़ जेल के सूत्रों से पता चला कि जैन को मसाज देने वाला शख्स कोई फिजियोथेरेपिस्ट नहीं है, बल्कि वो दुष्कर्म के केस में सजा काट रहा एक कैदी है। तिहाड़ जेल के सूत्रों से जानकारी मिली है कि उसका नाम रिंकू है। रिंकू पर पोक्सो की धारा 6 और आईपीसी की धारा 376, 506 और 509 के तहत आरोप लगे हैं।

वीडियो में देखा गया था कि जेल में बंद सत्येंद्र जैन एक बैड पर लेटकर हाथों और पैरों की मसाज करा रहे हैं।

तिहाड़ जेल प्रशासन पर भी उठे सवाल

सत्येन्द्र जैन को लेकर तिहाड़ जेल से एक के बाद एक वायरल हो रहे वीडियो को लेकर जेल प्रशासन पर भी सवाल उठने लगे हैं। आखिर जैन को ये सारी सुविधाएं मुहैया कैसे हो रही हैं। उनको जेल में होटल का खाना, फल और ड्राई फ्रूट्स ये सारी चीजें उन तक कैसे पहुंचती है। जेल में बंद जैन को वीआईपी ट्रीटमेंट दिया जा रहा है। जैन न तो कैदियों वाले कपड़े पहनते हैं और न ही जेल का खाना खाते हैं। जेल में उनकी हर फरमाइश पूरी की जा रही है। इस मेहरबानी के पीछे किसका हाथ है ये अपने आप में बड़ा सवाल है।

दिसंबर अंत तक बनेगी शहरों की नई सरकार

प्रदेश में शहरों की सरकार चुनने के लिए 763 नगर निकायों के चुनाव मैनपुरी लोकसभा, रामपुर और खतौली विधानसभा उप चुनाव और गुजरात विधानसभा चुनाव के बाद ही कराए जाएंगे। नगर विकास विभाग और राज्य निर्वाचन आयोग ने चुनाव में प्रशासन व पुलिस के पर्याप्त इंतजाम व अन्य व्यवस्थाओं के मद्देनजर दिसंबर के अंतिम सप्ताह तक चुनाव कराने का विचार किया है।प्रदेश में 17 नगर निगम, 200 नगर पालिका परिषद और 546 नगर पंचायतों में चुनाव होना है। अभी मैनपुरी लोकसभा, खतौली और रामपुर विधानसभा क्षेत्र में उप चुनाव होने हैं। गुजरात में भी विधानसभा चुनाव चल रहे है। सभी राजनीतिक दल इन चुनावों में व्यस्त हैं। गुजरात चुनाव और प्रदेश के उपचुनाव के लिए 5 दिसंबर को मतदान होगा और 8 दिसंबर को मतगणना होगी। सूत्रों के मुताबिक राजनीतिक दल चाहते हैं कि गुजरात चुनाव और उप चुनाव के बाद ही निकाय चुनाव कराए जाएं ताकि उन्हें पर्याप्त समय मिल सके।ताकि अनुपूरक बजट से आचार संहिता प्रभावित न हो विधानमंडल का शीतकालीन सत्र 5 दिसंबर से होगा। इस सत्र में सरकार अनुपूरक बजट भी लाएगी। इसमें सरकार कुछ नई योजनाओं के लिए बजट की घोषणा कर सकती है। सूत्रों के मुताबिक यदि अनुपूरक बजट से पहले निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी कर दी गई तो बजट घोषणा से आचार संहिता प्रभावित होगी। लिहाजा आयोग और शासन के स्तर पर शीतकालीन सत्र के बाद ही निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी करने पर सैद्धांतिक सहमति बनी है।दिसंबर के पहले सप्ताह में होगा आरक्षण निर्धारण नगर पंचायत एवं नगर पालिका परिषद में सभासद एवं चेयरमैन, नगर निगम में पार्षद और महापौर के लिए आरक्षण का निर्धारण दिसंबर के पहले सप्ताह तक होगा। सूत्रों के अनुसार नवंबर के अंतिम सप्ताह में आरक्षण का प्रारूप जारी कर उस पर आपत्तियां मांगी जाएगी। दिसंबर के पहले सप्ताह तक आपत्तियों का निस्तराण कर आरक्षण जारी किया जाएगा।प्रदेश में शहरों की सरकार चुनने के लिए 763 नगर निकायों के चुनाव मैनपुरी लोकसभा, रामपुर और खतौली विधानसभा उप चुनाव और गुजरात विधानसभा चुनाव के बाद ही कराए जाएंगे। नगर विकास विभाग और राज्य निर्वाचन आयोग ने चुनाव में प्रशासन व पुलिस के पर्याप्त इंतजाम व अन्य व्यवस्थाओं के मद्देनजर दिसंबर के अंतिम सप्ताह तक चुनाव कराने का विचार किया है।प्रदेश में 17 नगर निगम, 200 नगर पालिका परिषद और 546 नगर पंचायतों में चुनाव होना है। अभी मैनपुरी लोकसभा, खतौली और रामपुर विधानसभा क्षेत्र में उप चुनाव होने हैं। गुजरात में भी विधानसभा चुनाव चल रहे है। सभी राजनीतिक दल इन चुनावों में व्यस्त हैं। गुजरात चुनाव और प्रदेश के उपचुनाव के लिए 5 दिसंबर को मतदान होगा और 8 दिसंबर को मतगणना होगी। सूत्रों के मुताबिक राजनीतिक दल चाहते हैं कि गुजरात चुनाव और उप चुनाव के बाद ही निकाय चुनाव कराए जाएं ताकि उन्हें पर्याप्त समय मिल सके।ताकि अनुपूरक बजट से आचार संहिता प्रभावित न हो विधानमंडल का शीतकालीन सत्र 5 दिसंबर से होगा। इस सत्र में सरकार अनुपूरक बजट भी लाएगी। इसमें सरकार कुछ नई योजनाओं के लिए बजट की घोषणा कर सकती है। सूत्रों के मुताबिक यदि अनुपूरक बजट से पहले निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी कर दी गई तो बजट घोषणा से आचार संहिता प्रभावित होगी। लिहाजा आयोग और शासन के स्तर पर शीतकालीन सत्र के बाद ही निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी करने पर सैद्धांतिक सहमति बनी है।दिसंबर के पहले सप्ताह में होगा आरक्षण निर्धारण नगर पंचायत एवं नगर पालिका परिषद में सभासद एवं चेयरमैन, नगर निगम में पार्षद और महापौर के लिए आरक्षण का निर्धारण दिसंबर के पहले सप्ताह तक होगा। सूत्रों के अनुसार नवंबर के अंतिम सप्ताह में आरक्षण का प्रारूप जारी कर उस पर आपत्तियां मांगी जाएगी। दिसंबर के पहले सप्ताह तक आपत्तियों का निस्तराण कर आरक्षण जारी किया जाएगा।प्रदेश में शहरों की सरकार चुनने के लिए 763 नगर निकायों के चुनाव मैनपुरी लोकसभा, रामपुर और खतौली विधानसभा उप चुनाव और गुजरात विधानसभा चुनाव के बाद ही कराए जाएंगे। नगर विकास विभाग और राज्य निर्वाचन आयोग ने चुनाव में प्रशासन व पुलिस के पर्याप्त इंतजाम व अन्य व्यवस्थाओं के मद्देनजर दिसंबर के अंतिम सप्ताह तक चुनाव कराने का विचार किया है।प्रदेश में 17 नगर निगम, 200 नगर पालिका परिषद और 546 नगर पंचायतों में चुनाव होना है। अभी मैनपुरी लोकसभा, खतौली और रामपुर विधानसभा क्षेत्र में उप चुनाव होने हैं।

आवश्यकता है
झुग्गी झोपडी हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
एवमं
JJ News Portal
के लिये उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले
के लिए संवाददाता, पेजमेकर आपरेटर,
विज्ञापन प्रतिनिधि और एजेंसी / ब्यूरो
चीफ बनने हेतु सम्पर्क करे!
सम्पादक - संजय कुमार यादव
9918366626 9454084311
पता
277/129, चकिया, जगमल का हाता,
पीएनबी एटीएम के पास

जटिल है कार्बन डेटिंग नए तरीकों से भी करनी होगी जांच हाईकोर्ट के आदेश के बाद मंथन शुरू

ज्ञानवापी प्रकरण में इलाहाबाद हाईकोर्ट के कार्बन डेटिंग के लिए आधुनिक तकनीक तलाश करने के आदेश पर मंथन शुरू हो गया है। कार्बन डेटिंग और पुरातत्व विशेषज्ञ का मानना है कि शिवलिंग के लिए यह प्रक्रिया आसान नहीं होगी। इसके लिए पुराने तरीक की जगह नई तकनीक व वैज्ञानिक सलाह से काम करना होगा। रिसर्च प्रोजेक्ट तैयार कर विशेषज्ञों की निगरानी में आयु की गणना की जाए। हालांकि कुछ अत्याधुनिक तकनीक से बिना शिवलिंग संरचना को नुकसान पहुंचाये ही उम्र का पता लगाया जा सकता है।बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पैलियोसाइंसेज (बीएसआईपी) लखनऊ के पूर्व वरिष्ठ पुराविज्ञानी और कार्बन डेटिंग लैब के पूर्व प्रभारी डॉ. सीएम नौटियाल ने बताया कि जिस शिवलिंग की आयु निकालनी है। उसके लिए छोटा ही सही लेकिन नमूना तो लेना ही होगा। इस दौरान नमूना नष्ट हो जाएगा, लेकिन शिवलिंग के अखंडित रहने पर भी संशय हैं ? बिना नमूना भी हो सकती है जांच डॉ. नौटियाल का कहना है कि कॉस्मिक किरणों में मिलने वाले म्यूऑन कणों की वर्षा करके आयु और पत्थर में तत्वों का पता लगाया जा सकता है। इसमें नमूने की जरूरत नहीं होती है। लेकिन, म्यूऑन कणों का श्रोत ज्ञानवापी के अंदर कैसे पहुंचे? उपयोग के बाद उत्सर्जित कणों की पहचान कैसे होगी? क्या शिवलिंग के पत्थर के सभी अंश एक ही समय के हैं? शुरुआती अवस्था में मौजूद यह तकनीक अभी अमेरिका में खास प्रोजेक्ट में प्रयोग की जाती है। इसके अलावा अमेरिका में एक उपकरण विकसित किया जा रहा है, जिससे प्रयोगशाला में बिना नमूना लाए ही साइट पर डेट निकाली जा सकती है, लेकिन इसमें भी नमूना लेना पड़ेगा। 50 हजार साल के लिए उपयोगी है कार्बन डेटिंग डॉ. नौटियाल का कहना है कि संभव है कि पत्थर की आयु लाखों, करोड़ों वर्ष निकले। रेडियोकार्बन से केवल 50 हजार साल तक की आयु ही पता चल सकती है। इससे यही कहा जा सकेगा कि यह 50 हजार साल से अधिक पुराना है। हालांकि पत्थर और चट्टानें तो पुरानी होती ही हैं। जीपीआर तकनीक का भी हो उपयोगशिवलिंग की आयु अधिक निकलने से वह पुराना सिद्ध नहीं होगा? पत्थर से शिवलिंग कब बनाया गया? उसकी संरचना क्या है? इसके लिए ग्राउंड पेनीट्रेशन रडार (जीपीआर) तकनीक का उपयोग किया जाए। वैसे तो इसके लिए सपाट जगह और बड़ी–बड़ी मशीनें चाहिए। खास प्रोजेक्ट के लिए ड्रोन पर भी उपकरण लगाकर उपयोग किया जाता है। इससे शिवलिंग के नीचे की संरचना और गहराई पता चलेगी। नासा द्वारा मंगल पर भेजे गए रोवर में भी शर्लक तकनीक का उपयोग हो रहा है। रामन विधि पर आधारित इस स्पेक्ट्रोमीटर से खनिजों और ऑर्गेनिक कंपाउंड की पहचान की जाती है। इससे चंद्रमा पर पत्थर में मौजूद तत्व का पता लगाया जाता है। इससे भी आयु के अनुमान के साक्ष्य मिलते हैं। 200 मिलीग्राम से भी कम चाहिए नमूनाडॉ. नौटियान ने बताया कि इस प्रोजेक्ट को तैयार करने के लिए पुरातत्वविद और वैज्ञानिक साथ बैठें और आपसी सहमति से अंतिम रूप दें। यहां एक से अधिक तकनीक का उपयोग करना पड़ सकता है। यह संवेदनशील मुद्दा है और शिवलिंग को क्षति भी नहीं पहुंचनी चाहिए। एक्सीलरेटर मास स्पेक्ट्रोमीटर (एएमएस) विधि में केवल 200 मिलीग्राम से भी कम का ही नमूना चाहिए।ज्ञानवापी प्रकरण में इलाहाबाद हाईकोर्ट के कार्बन डेटिंग के लिए आधुनिक तकनीक तलाश करने के आदेश पर मंथन शुरू हो गया है। कार्बन डेटिंग और पुरातत्व विशेषज्ञ का मानना है कि शिवलिंग के लिए यह प्रक्रिया आसान नहीं होगी। इसके लिए पुराने तरीक की जगह नई तकनीक व वैज्ञानिक सलाह से काम करना होगा। रिसर्च प्रोजेक्ट तैयार कर विशेषज्ञों की निगरानी में आयु की गणना की जाए। हालांकि कुछ अत्याधुनिक तकनीक से बिना शिवलिंग संरचना को नुकसान पहुंचाये ही उम्र का पता लगाया जा सकता है।बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पैलियोसाइंसेज (बीएसआईपी) लखनऊ के पूर्व वरिष्ठ पुराविज्ञानी और कार्बन डेटिंग लैब के पूर्व प्रभारी डॉ. सीएम नौटियाल ने बताया कि जिस शिवलिंग की आयु निकालनी है। उसके लिए छोटा ही सही लेकिन नमूना तो लेना ही होगा। इस दौरान नमूना नष्ट हो जाएगा, लेकिन शिवलिंग के अखंडित रहने पर भी संशय हैं ? बिना नमूना भी हो सकती है जांच डॉ. नौटियाल का कहना है कि कॉस्मिक किरणों में मिलने वाले म्यूऑन कणों की वर्षा करके आयु और पत्थर में तत्वों का पता लगाया जा सकता है। इसमें नमूने की जरूरत नहीं होती है। लेकिन, म्यूऑन कणों का श्रोत ज्ञानवापी के अंदर कैसे पहुंचे? उपयोग के बाद उत्सर्जित कणों की पहचान कैसे होगी? क्या शिवलिंग के पत्थर के सभी अंश एक ही समय के हैं? शुरुआती अवस्था में मौजूद यह तकनीक अभी अमेरिका में खास प्रोजेक्ट में प्रयोग की जाती है। इसके अलावा अमेरिका में एक उपकरण विकसित किया जा रहा है, जिससे प्रयोगशाला में बिना नमूना लाए ही साइट पर डेट निकाली जा सकती है, लेकिन इसमें भी नमूना लेना पड़ेगा। 50 हजार साल के लिए उपयोगी है कार्बन डेटिंग डॉ. नौटियाल का कहना है कि संभव है कि पत्थर की आयु लाखों, करोड़ों वर्ष निकले। रेडियोकार्बन से केवल 50 हजार साल तक की आयु ही पता चल सकती है। इससे यही कहा जा सकेगा कि यह 50 हजार साल से अधिक पुराना है। हालांकि पत्थर और चट्टानें तो पुरानी होती ही हैं। जीपीआर तकनीक का भी हो उपयोगशिवलिंग की आयु अधिक निकलने से वह पुराना सिद्ध नहीं होगा? पत्थर से शिवलिंग कब बनाया गया? उसकी संरचना क्या है? इसके लिए ग्राउंड पेनीट्रेशन रडार (जीपीआर) तकनीक का उपयोग किया जाए। वैसे तो इसके लिए सपाट जगह और बड़ी–बड़ी मशीनें चाहिए। खास प्रोजेक्ट के लिए ड्रोन पर भी उपकरण लगाकर उपयोग किया जाता है। इससे शिवलिंग के नीचे की संरचना और गहराई पता चलेगी। नासा द्वारा मंगल पर भेजे गए रोवर में भी शर्लक तकनीक का उपयोग हो रहा है। रामन विधि पर आधारित इस स्पेक्ट्रोमीटर से खनिजों और ऑर्गेनिक कंपाउंड की पहचान की जाती है। इससे चंद्रमा पर पत्थर में मौजूद तत्व का पता लगाया जाता है। इससे भी आयु के अनुमान के साक्ष्य मिलते हैं। 200 मिलीग्राम से भी कम चाहिए नमूनाडॉ. नौटियान ने बताया कि इस प्रोजेक्ट को तैयार करने के लिए पुरातत्वविद और वैज्ञानिक साथ बैठें और आपसी सहमति से अंतिम रूप दें। यहां एक से अधिक तकनीक का उपयोग करना पड़ सकता है। यह संवेदनशील मुद्दा है और शिवलिंग को क्षति भी नहीं पहुंचनी चाहिए। एक्सीलरेटर मास स्पेक्ट्रोमीटर (एएमएस) विधि में केवल 200 मिलीग्राम से भी कम का ही नमूना चाहिए।ज्ञानवापी प्रकरण में इलाहाबाद हाईकोर्ट के कार्बन डेटिंग के लिए आधुनिक तकनीक तलाश करने के आदेश पर मंथन शुरू हो गया है। कार्बन डेटिंग और पुरातत्व विशेषज्ञ का मानना है कि शिवलिंग के लिए यह प्रक्रिया आसान नहीं होगी। इसके लिए पुराने तरीक की जगह नई तकनीक व वैज्ञानिक सलाह से काम करना होगा। रिसर्च प्रोजेक्ट तैयार कर विशेषज्ञों की निगरानी में आयु की गणना की जाए। हालांकि कुछ अत्याधुनिक तकनीक से बिना शिवलिंग संरचना को नुकसान पहुंचाये ही उम्र का पता लगाया जा सकता है।बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पैलियोसाइंसेज (बीएसआईपी) लखनऊ के पूर्व वरिष्ठ पुराविज्ञानी और कार्बन डेटिंग लैब के पूर्व प्रभारी डॉ. सीएम नौटियाल ने बताया कि जिस शिवलिंग की आयु निकालनी है। उसके लिए छोटा ही सही लेकिन नमूना तो लेना ही होगा। इस दौरान नमूना नष्ट हो जाएगा, लेकिन शिवलिंग के अखंडित रहने पर भी संशय हैं ? बिना नमूना भी हो सकती है जांच डॉ. नौटियाल का कहना है कि कॉस्मिक किरणों में मिलने वाले म्यूऑन कणों की वर्षा करके आयु और पत्थर में तत्वों का पता लगाया जा सकता है। इसमें नमूने की जरूरत नहीं होती है। लेकिन, म्यूऑन कणों का श्रोत ज्ञानवापी के अंदर कैसे पहुंचे? उपयोग के बाद उत्सर्जित कणों की पहचान कैसे होगी? क्या शिवलिंग के पत्थर के सभी अंश एक ही समय के हैं? शुरुआती अवस्था में मौजूद यह तकनीक अभी अमेरिका में खास प्रोजेक्ट में प्रयोग की जाती है। इसके अलावा अमेरिका में एक उपकरण विकसित किया जा रहा है, जिससे प्रयोगशाला में बिना नमूना लाए ही साइट पर डेट निकाली जा सकती है।

रामन विधि पर आधारित इस स्पेक्ट्रोमीटर से खनिजों और ऑर्गेनिक कंपाउंड की पहचान की जाती है। इससे चंद्रमा पर पत्थर में मौजूद तत्व का पता लगाया जाता है। इससे भी आयु के अनुमान के साक्ष्य मिलते हैं। 200 मिलीग्राम से भी कम चाहिए नमूनाडॉ. नौटियान ने बताया कि इस प्रोजेक्ट को तैयार करने के लिए पुरातत्वविद और वैज्ञानिक साथ बैठें और आपसी सहमति से अंतिम रूप दें। यहां एक से अधिक तकनीक का उपयोग करना पड़ सकता है। यह संवेदनशील मुद्दा है और शिवलिंग को क्षति भी नहीं पहुंचनी चाहिए। एक्सीलरेटर मास स्पेक्ट्रोमीटर (एएमएस) विधि में केवल 200 मिलीग्राम से भी कम का ही नमूना चाहिए।ज्ञानवापी प्रकरण में इलाहाबाद हाईकोर्ट के कार्बन डेटिंग के लिए आधुनिक तकनीक तलाश करने के आदेश पर मंथन शुरू हो गया है। कार्बन डेटिंग और पुरातत्व विशेषज्ञ का मानना है कि शिवलिंग के लिए यह प्रक्रिया आसान नहीं होगी। इसके लिए पुराने तरीक की जगह नई तकनीक व वैज्ञानिक सलाह से काम करना होगा। रिसर्च प्रोजेक्ट तैयार कर विशेषज्ञों की निगरानी में आयु की गणना की जाए। हालांकि कुछ अत्याधुनिक तकनीक से बिना शिवलिंग संरचना को नुकसान पहुंचाये ही उम्र का पता लगाया जा सकता है।बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पैलियोसाइंसेज (बीएसआईपी) लखनऊ के पूर्व वरिष्ठ पुराविज्ञानी और कार्बन डेटिंग लैब के पूर्व प्रभारी डॉ. सीएम नौटियाल ने बताया कि जिस शिवलिंग की आयु निकालनी है। उसके लिए छोटा ही सही लेकिन नमूना तो लेना ही होगा। इस दौरान नमूना नष्ट हो जाएगा, लेकिन शिवलिंग के अखंडित रहने पर भी संशय हैं ? बिना नमूना भी हो सकती है जांच डॉ. नौटियाल का कहना है कि कॉस्मिक किरणों में मिलने वाले म्यूऑन कणों की वर्षा करके आयु और पत्थर में तत्वों का पता लगाया जा सकता है। इसमें नमूने की जरूरत नहीं होती है। लेकिन, म्यूऑन कणों का श्रोत ज्ञानवापी के अंदर कैसे पहुंचे? उपयोग के बाद उत्सर्जित कणों की पहचान कैसे होगी? क्या शिवलिंग के पत्थर के सभी अंश एक ही समय के हैं? शुरुआती अवस्था में मौजूद यह तकनीक अभी अमेरिका में खास प्रोजेक्ट में प्रयोग की जाती है। इसके अलावा अमेरिका में एक उपकरण विकसित किया जा रहा है, जिससे प्रयोगशाला में बिना नमूना लाए ही साइट पर डेट निकाली जा सकती है।

दोनों तरफ की हैं अपनी-अपनी शिकायतें, तालिबान-पाकिस्तान के रिश्तों में बढ़ती जा रही है खटास

अफगानिस्तान के मामले में पाकिस्तान के बदलते रुख पर तालिबान सरकार कड़ी नजर रख रही है। यहां ये आम समझ बनी है कि पिछले साल तालिबान के सत्ता में काबिज होने के बाद पाकिस्तान ने जो दोस्ताना रुख दिखाया था, वह दौर गुजर चुका है। अब पाकिस्तान की ज्यादा दिलचस्पी अफगानिस्तान में अड्डा बनाए आतंकवादी संगठनों को नियंत्रित करने में है। साथ ही वह अफगानिस्तान में भारत की संभावित भूमिका को रोकने की कोशिश में जुटा हुआ है। इससे अफगानिस्तान की मौजूदा सरकार के साथ पाकिस्तान के रिश्तों में कड़वाहट लगातार बढ़ रही है।विश्लेषकों के मुताबिक पाकिस्तान की शिकायत यह है कि तालिबान सरकार ने उसकी चिंताओं को दूर नहीं किया है। तालिबान के सत्ता में आने के बाद से पाकिस्तान में आतंकवादी हमलों में 56 फीसदी का इजाफा हुआ है। अफगानिस्तान में अल-कायदा, तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) और इस्लामिक स्टेट खोरासान (आईएसआईएस-के) के अड्डे पहले की तरह मौजूद हैं। पाकिस्तान का आरोप है कि ये गुट ही सीमा पार से उसके यहां आतंकवादी हमले कर रहे हैं। खासकर टीटीपी का निशाना पाकिस्तान बना हुआ है।पर्यवेक्षकों ने ध्यान दिलाया है कि इस वर्ष सितंबर में संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने अफगानिस्तान की आलोचना की थी। उन्होंने कहा था कि अफगानिस्तान में सक्रिय आतंकवादी गुटों को लेकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चिंता से पाकिस्तान सहमत है। उस भाषण से तालिबान में गहरी नाराजगी देखी गई। उधर पाकिस्तानी टीकाकारों ने कहा है कि तालिबान स्वायत्त विदेश नीति अपनाने की कोशिश में है, जिससे पाकिस्तान के हितों को चोट पहुंच सकती है।इस्लामाबाद स्थित नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी में समाज विज्ञान के असिस्टेंट प्रोफेसर अहमद वकास ने वेबसाइट एशिया टाइम्स पर छपी एक टिप्पणी में लिखा है- 'तालिबान भारत से अनुरोध कर रहा है कि वह द्विपक्षीय व्यापार और मानवीय सहायता फिर शुरू कर अफगानिस्तान में अभी भूमिका बढ़ाए। तालिबान ने अफगान बलों के प्रशिक्षण में भारत की मदद लेने में दिलचस्पी दिखाई है।'तालिबान ने ईरान में चाबहार बंदरगाह परियोजना का समर्थन किया है। जबकि ये परियोजना पाकिस्तान के ग्वादार बंदरगाह के मुकाबले विकसित की गई है। अहमद वकास ने कहा है कि यह भी इस बात की मिसाल है कि तालिबान पाकिस्तान के हितों की अनदेखी कर रहा है।पर्यवेक्षकों के मुताबिक अफगानिस्तान में अपना प्रभाव रखना अपने विदेश नीति मकसदों के लिहाज से पाकिस्तान को बेहद अहम मालूम पड़ता है। जबकि मौजूदा तालिबान सरकार लगातार उसे अहसास करा रही है कि यह 1990 के दशक जैसी तालिबान सरकार नहीं है। उस समय ये धारणा बनी थी कि तालिबान सरकार के सूत्र पाकिस्तान- खास कर पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के हाथ में हैं।तालिबान के सूत्र भी यह कहने में नहीं हिचकते कि पाकिस्तान के साथ उनका रिश्ता संरक्षक और अधीनस्थ का नहीं हो सकता। तालिबान की शिकायत यह है कि पाकिस्तान सरकार उसके साथ बराबरी का व्यवहार नहीं करती है। विश्लेषकों के मुताबिक एक दूसरे के प्रति दोनों तरफ गहराती शिकायतों से दोनों देशों के रिश्ते हाल के महीनों में लगातार बिगड़े हैं।अफगानिस्तान के मामले में पाकिस्तान के बदलते रुख पर तालिबान सरकार कड़ी नजर रख रही है। यहां ये आम समझ बनी है कि पिछले साल तालिबान के सत्ता में काबिज होने के बाद पाकिस्तान ने जो दोस्ताना रुख दिखाया था, वह दौर गुजर चुका है। अब पाकिस्तान की ज्यादा दिलचस्पी अफगानिस्तान में अड्डा बनाए आतंकवादी संगठनों को नियंत्रित करने में है। साथ ही वह अफगानिस्तान में भारत की संभावित भूमिका को रोकने की कोशिश में जुटा हुआ है। इससे अफगानिस्तान की मौजूदा सरकार के साथ पाकिस्तान के रिश्तों में कड़वाहट लगातार बढ़ रही है।विश्लेषकों के मुताबिक पाकिस्तान की शिकायत यह है कि तालिबान सरकार ने उसकी चिंताओं को दूर नहीं किया है। तालिबान के सत्ता में आने के बाद से पाकिस्तान में आतंकवादी हमलों में 56 फीसदी का इजाफा हुआ है। अफगानिस्तान में अल-कायदा, तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) और इस्लामिक स्टेट खोरासान (आईएसआईएस-के) के अड्डे पहले की तरह मौजूद हैं। पाकिस्तान का आरोप है कि ये गुट ही सीमा पार से उसके यहां आतंकवादी हमले कर रहे हैं। खासकर टीटीपी का निशाना पाकिस्तान बना हुआ है।पर्यवेक्षकों ने ध्यान दिलाया है कि इस वर्ष सितंबर में संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने अफगानिस्तान की आलोचना की थी। उन्होंने कहा था कि अफगानिस्तान में सक्रिय आतंकवादी गुटों को लेकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चिंता से पाकिस्तान सहमत है। उस भाषण से तालिबान में गहरी नाराजगी देखी गई। उधर पाकिस्तानी टीकाकारों ने कहा है कि तालिबान स्वायत्त विदेश नीति अपनाने की कोशिश में है, जिससे पाकिस्तान के हितों को चोट पहुंच सकती है।इस्लामाबाद स्थित नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी में समाज विज्ञान के असिस्टेंट प्रोफेसर अहमद वकास ने वेबसाइट एशिया टाइम्स पर छपी एक टिप्पणी में लिखा है- 'तालिबान भारत से अनुरोध कर रहा है कि वह द्विपक्षीय व्यापार और मानवीय सहायता फिर शुरू कर अफगानिस्तान में अभी भूमिका बढ़ाए। तालिबान ने अफगान बलों के प्रशिक्षण में भारत की मदद लेने में दिलचस्पी दिखाई है।'तालिबान ने ईरान में चाबहार बंदरगाह परियोजना का समर्थन किया है। जबकि ये परियोजना पाकिस्तान के ग्वादार बंदरगाह के मुकाबले विकसित की गई है। अहमद वकास ने कहा है कि यह भी इस बात की मिसाल है कि तालिबान पाकिस्तान के हितों की अनदेखी कर रहा है।पर्यवेक्षकों के मुताबिक अफगानिस्तान में अपना प्रभाव रखना अपने विदेश नीति मकसदों के लिहाज से पाकिस्तान को बेहद अहम मालूम पड़ता है। जबकि मौजूदा तालिबान सरकार लगातार उसे अहसास करा रही है कि यह 1990 के दशक जैसी तालिबान सरकार नहीं है। उस समय ये धारणा बनी थी कि तालिबान सरकार के सूत्र पाकिस्तान- खास कर पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के हाथ में हैं।तालिबान के सूत्र भी यह कहने में नहीं हिचकते कि पाकिस्तान के साथ उनका रिश्ता संरक्षक और अधीनस्थ का नहीं हो सकता।

वनडे सीरीज से पहले बोले धवन– मैं कप्तान के रूप में अब ज्यादा परिपक्व, मुश्किल फैसले ले सकता हूं

भारत और न्यूजीलैंड के बीच वनडे सीरीज की शुरुआत 25 नवंबर से हो रही है। इस सीरीज में शिखर धवन को भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया है। धवन तीसरी बार टीम इंडिया की कप्तानी कर रहे हैं। वह इससे पहले श्रीलंका के खिलाफ कप्तानी करते हुए उन्होंने भारत को तीन मैच जिताए हैं, जबकि दो में टीम इंडिया को हार का सामना करना पड़ा है। वहीं, दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उन्होंने 2–1 और वेस्टइंडीज के खिलाफ 3–0 के अंतर से सीरीज जीती है।धवन ने न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज से पहले कहा कि समय के साथ उनकी निर्णय लेने की क्षमता बेहतर हुई है। एक स्पोर्ट्स वेबसाइट से बात करते हुए धवन ने कहा ष्जैसे–जैसे आप अधिक मैच खेलते हैं, आप अपने फैसलों पर विश्वास करते हैं। पहले मैं एक गेंदबाज को अतिरिक्त ओवर देता था ताकि उसे बुरा न लगे, लेकिन अब मैं परिपक्व हो गया हूं। भले ही मैं किसी को बुरा लग रहा है, मैं वह निर्णय लूंगा जो टीम के हित में हो।अपनी कप्तानी पर बात करते हुए धवन ने कहा ष्जब आप किसी वाद्य यंत्र पर संगीत बजाते हैं, तो स्ट्रिंग बहुत ढीली होगी तो संगीत अच्छा नहीं लगेगा और वह बहुत कसी हुई है, तो यह टूट जाएगी। इसलिए संतुलन बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। आपको यह समझने की जरूरत है कि कब स्ट्रिंग को कस कर खींचना है और कब इसे थोड़ा ढीला छोड़ना है। यह एक कला है। यह समय की बात है। इस स्तर पर मैं यह भी समझता हूं कि खिलाड़ियों से कब और कितनी बात करनी है। अगर कोई गेंदबाज पिट जाता है, तो यह जानना महत्वपूर्ण है कि उससे कब बात करनी है। मैं ऐसा तब नहीं करूंगा जब वह गुस्से में हो, बल्कि बाद में उससे बात करूंगा और प्यार से उसे समझाने की कोशिश करूंगा। यह उस स्तर पर भी निर्भर करता है जिस पर आप आगे बढ़ रहे हैं।ष्अगर यह आईपीएल में है, तो अधिकांश खिलाड़ी परिपक्व हैं, इसलिए आपको यह विचार करने की आवश्यकता है कि आपको स्ट्रिंग खींचनी है या नहीं। रणजी में, आपको कई बार सख्ती दिखानी होती है, क्योंकि उस स्तर पर एक युवा खिलाड़ी कच्चे घड़े की तरह होता है। आपको उसे ढालने के लिए सख्त रहना होगा। उस संतुलन को खोजना जरूरी है।36 वर्षीय धवन को हाल ही में आईपीएल में पंजाब किंग्स का कप्तान बनाया गया है। यह टीम 2018, 2019, 2020 और 2022 में प्ले–ऑफ में जगह बनाने के करीब थी, लेकिन अंतिम समय पर चूक गई। इस पर धवन ने कहा ष्हम अपने अतीत से सीख सकते हैं और अपनी गलतियों में सुधार कर सकते हैं। इसके अलावा, मैं किसी और चीज पर ज्यादा ध्यान नहीं दूंगा और न ही मैं चाहता हूं कि मेरी टीम ऐसा करे। पिछले रिकॉर्ड को ढोने की जरूरत नहीं है।धवन ने बताया कि वह कैसे पंजाब की टीम में अंतर डालेंगे। उन्होंने कहा ष्मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि सहयोगी स्टाफ और मैं एक ऐसा माहौल बनाएं जहां खिलाड़ी सहज हों। मैं चाहता हूं कि मेरे लड़के भी अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए खुद बनें। मैं चाहता हूं कि हम आराम करें लेकिन ध्यान केंद्रित करें। हम आईपीएल खेल रहे हैं। हम अपना सपना जी रहे हैं। और जब आप अपना सपना जी रहे हैं, तो यह खुशी से भरा होना चाहिए, तनाव से नहीं। प्यार से आप कुछ भी जीत सकते हैं। ट्रॉफी कोई चुनौती नहीं है।भारत और न्यूजीलैंड के बीच वनडे सीरीज की शुरुआत 25 नवंबर से हो रही है। इस सीरीज में शिखर धवन को भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया है। ६ ावन तीसरी बार टीम इंडिया की कप्तानी कर रहे हैं। वह इससे पहले श्रीलंका के खिलाफ कप्तानी करते हुए उन्होंने भारत को तीन मैच जिताए हैं, जबकि दो में टीम इंडिया को हार का सामना करना पड़ा है। वहीं, दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उन्होंने 2–1 और वेस्टइंडीज के खिलाफ 3–0 के अंतर से सीरीज जीती है।धवन ने न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज से पहले कहा कि समय के साथ उनकी निर्णय लेने की क्षमता बेहतर हुई है। एक स्पोर्ट्स वेबसाइट से बात करते हुए धवन ने कहा ष्जैसे–जैसे आप अधिक मैच खेलते हैं, आप अपने फैसलों पर विश्वास करते हैं। पहले मैं एक गेंदबाज को अतिरिक्त ओवर देता था ताकि उसे बुरा न लगे, लेकिन अब मैं परिपक्व हो गया हूं। भले ही मैं किसी को बुरा लग रहा है, मैं वह निर्णय लूंगा जो टीम के हित में हो।अपनी कप्तानी पर बात करते हुए धवन ने कहा ष्जब आप किसी वाद्य यंत्र पर संगीत बजाते हैं, तो स्ट्रिंग बहुत ढीली होगी तो संगीत अच्छा नहीं लगेगा और वह बहुत कसी हुई है, तो यह टूट जाएगी। इसलिए संतुलन बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। आपको यह समझने की जरूरत है कि कब स्ट्रिंग को कस कर खींचना है और कब इसे थोड़ा ढीला छोड़ना है। यह एक कला है। यह समय की बात है। इस स्तर पर मैं यह भी समझता हूं कि खिलाड़ियों से कब और कितनी बात करनी है। अगर कोई गेंदबाज पिट जाता है, तो यह जानना महत्वपूर्ण है कि उससे कब बात करनी है। मैं ऐसा तब नहीं करूंगा जब वह गुस्से में हो, बल्कि बाद में उससे बात करूंगा और प्यार से उसे समझाने की कोशिश करूंगा। यह उस स्तर पर भी निर्भर करता है जिस पर आप आगे बढ़ रहे हैं।ष्अगर यह आईपीएल में है, तो अधिकांश खिलाड़ी परिपक्व हैं, इसलिए आपको यह विचार करने की आवश्यकता है कि आपको स्ट्रिंग खींचनी है या नहीं। रणजी में, आपको कई बार सख्ती दिखानी होती है, क्योंकि उस स्तर पर एक युवा खिलाड़ी कच्चे घड़े की तरह होता है। आपको उसे ढालने के लिए सख्त रहना होगा। उस संतुलन को खोजना जरूरी है।36 वर्षीय धवन को हाल ही में आईपीएल में पंजाब किंग्स का कप्तान बनाया गया है। यह टीम 2018, 2019, 2020 और 2022 में प्ले–ऑफ में जगह बनाने के करीब थी, लेकिन अंतिम समय पर चूक गई। इस पर धवन ने कहा ष्हम अपने अतीत से सीख सकते हैं और अपनी गलतियों में सुधार कर सकते हैं। इसके अलावा, मैं किसी और चीज पर ज्यादा ध्यान नहीं दूंगा और न ही मैं चाहता हूं कि मेरी टीम ऐसा करे। पिछले रिकॉर्ड को ढोने की जरूरत नहीं है।धवन ने बताया कि वह कैसे पंजाब की टीम में अंतर डालेंगे। उन्होंने कहा ष्मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि सहयोगी स्टाफ और मैं एक ऐसा माहौल बनाएं जहां खिलाड़ी सहज हों। मैं चाहता हूं कि मेरे लड़के भी अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए खुद बनें। मैं चाहता हूं कि हम आराम करें लेकिन ध्यान केंद्रित करें। हम आईपीएल खेल रहे हैं। हम अपना सपना जी रहे हैं। और जब आप अपना सपना जी रहे हैं, तो यह खुशी से भरा होना चाहिए, तनाव से नहीं। प्यार से आप कुछ भी जीत सकते हैं। ट्रॉफी कोई चुनौती नहीं है।भारत और न्यूजीलैंड के बीच वनडे सीरीज की शुरुआत 25 नवंबर से हो रही है। इस सीरीज में शिखर धवन को भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया है। ६ ावन तीसरी बार टीम इंडिया की कप्तानी कर रहे हैं। वह इससे पहले श्रीलंका के खिलाफ कप्तानी करते हुए उन्होंने भारत को तीन मैच जिताए हैं, जबकि दो में टीम इंडिया को हार का सामना करना पड़ा है। वहीं, दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उन्होंने 2–1 और वेस्टइंडीज के खिलाफ 3–0 के अंतर से सीरीज जीती है।धवन ने न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज से पहले कहा कि समय के साथ उनकी निर्णय लेने की क्षमता बेहतर हुई है। एक स्पोर्ट्स वेबसाइट से बात करते हुए धवन ने कहा ष्जैसे–जैसे आप अधिक मैच खेलते हैं, आप अपने फैसलों पर विश्वास करते हैं। पहले मैं एक गेंदबाज को अतिरिक्त ओवर देता था ताकि उसे बुरा न लगे, लेकिन अब मैं परिपक्व हो गया हूं। भले ही मैं किसी को बुरा लग रहा है, मैं वह निर्णय लूंगा जो टीम के हित में हो।अपनी कप्तानी पर बात करते हुए धवन ने कहा ष्जब आप किसी वाद्य यंत्र पर संगीत बजाते हैं, तो स्ट्रिंग बहुत ढीली होगी तो संगीत अच्छा नहीं लगेगा और वह बहुत कसी हुई है, तो यह टूट जाएगी। इसलिए संतुलन बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। आपको यह समझने की जरूरत है कि कब स्ट्रिंग को कस कर खींचना है और कब इसे थोड़ा ढीला छोड़ना है। यह एक कला है। यह समय की बात है। इस स्तर पर मैं यह भी समझता हूं कि खिलाड़ियों से कब और कितनी बात करनी है। अगर कोई गेंदबाज पिट जाता है, तो यह जानना महत्वपूर्ण है कि उससे कब बात करनी है। मैं ऐसा तब नहीं करूंगा जब वह गुस्से में हो, बल्कि बाद में उससे बात करूंगा और प्यार से उसे समझाने की कोशिश करूंगा। यह उस स्तर पर भी निर्भर करता है जिस पर आप आगे बढ़ रहे हैं।ष्अगर यह आईपीएल में है, तो अधिकांश खिलाड़ी परिपक्व हैं, इसलिए आपको यह विचार करने की आवश्यकता है कि आपको स्ट्रिंग खींचनी है या नहीं। रणजी में, आपको कई बार सख्ती दिखानी होती है, क्योंकि उस स्तर पर एक युवा खिलाड़ी कच्चे घड़े की तरह होता है। आपको उसे ढालने के लिए सख्त रहना होगा। उस संतुलन को खोजना जरूरी है।36 वर्षीय धवन को हाल ही में आईपीएल में पंजाब किंग्स का कप्तान बनाया गया है। यह टीम 2018, 2019, 2020 और 2022 में प्ले–ऑफ में जगह बनाने के करीब थी, लेकिन अंतिम समय पर चूक गई। इस पर धवन ने कहा ष्हम अपने अतीत से सीख सकते हैं और अपनी गलतियों में सुधार कर सकते हैं। इसके अलावा, मैं किसी और चीज पर ज्यादा ध्यान नहीं दूंगा और न ही मैं चाहता हूं कि मेरी टीम ऐसा करे। पिछले रिकॉर्ड को ढोने की जरूरत नहीं है।धवन ने बताया कि वह कैसे पंजाब की टीम में अंतर डालेंगे। उन्होंने कहा ष्मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि सहयोगी स्टाफ और मैं एक ऐसा माहौल बनाएं जहां खिलाड़ी सहज हों। मैं चाहता हूं कि मेरे लड़के भी अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए खुद बनें। मैं चाहता हूं कि हम आराम करें लेकिन ध्यान केंद्रित करें।

मां बनने के बाद वजन बढ़ने पर इन हसीनाओं को सुनने पड़े ताने, सोशल मीडिया पर भी जमकर हुईं ट्रोल

साल 2022 बहुत सी अभिनेत्रियों के लिए खास रहा है। टीवी जगत से लेकर बॉलीवुड तक कई एक्ट्रेसिस हैं ऐसी हैं, जिनके घर इस साल नन्हे मुन्ने मेहमानों का जन्म हुआ है। ये अभिनेत्रियां अपने जीवन के इस नए सफर की शुरुआत करके काफी खुश हैं और आए दिन मातृत्व से जुड़े सुखों के बारे में बताती रहती हैं। लेकिन प्रेग्नेंसी एक फेज अगर खुशी से भरा होता है, तो दूसरा कभी–कभी महिलाओं के लिए दुखों का कारण भी बन जाता है। फिर चाहे आम महिला हो या कोई अभिनेत्री प्रेग्नेंसी के बाद बढ़ा हुआ वजन बहुत ही आम बात होती है और यह वजन घटाना किसी मुसीबत से कम नहीं होता। इस वजन को कम करने में कई टीवी अभिनेत्रियों को भी दिक्कतों का सामना करना पड़ा है, जिसके कारण वह ट्रोलिंग का शिकार भी हो चुकी हैं। ऐसे में आज इस रिपोर्ट में हम

आपको उन अभिनेत्रियों के बारे में बताने जा रहे हैं, जो बढ़े वजन के लिए ट्रोल हो चुकी हैं और उन्हें अपना ये वजन घटाने में काफी दिक्कतों का सामना भी करना पड़ा था। अनुपमाश से घर–घर के लोगों के दिलों पर राज कर रही अभिनेत्री रूपाली गांगुली भी प्रेग्नेंसी के बाद बढ़े वजन के कारण ट्रोलिंग का शिकार हो चुकी हैं। रूपाली गांगुली ने अपने उन दिनों के बारे में बात करते हुए बताया था, श्जब मेरा बेटा रुद्रांश हुआ तो मेरा वजन 58 से 86 किलो तक पहुंच गया था। जब मैं अपने बच्चे को घुमाने बाहर लेकर जाती थी तो कई पड़ोसी, जिन्हें सही से मैं जानती तक नहीं थी। बोलती थीं कि तुम कितनी मोटी हो गई हो। किसी मां को उसके बढ़े वजन के लिए जज करने का अधिकार आपको किसने दिया।सात महीने के अंदर दोबारा मां बनी अभिनेत्री देबीना बनर्जी के घर कुछ दिनों पहले ही दूसरी बेटी का जन्म हुआ है। अपने जीवन में आई खुशी से देबीना और गुरमीत काफी उत्साहित महसूस कर रहे हैं। लेकिन अभिनेत्री इस वक्त बढ़ते वजन से जूझ रही हैं। इस बात की जानकारी देबीना ने खुद

अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर कुछ तस्वीरें साझा करके दी है। टीवी की मशहूर अभिनेत्री अनीता हसनंदानी के बेटे का जन्म हुए डेढ़ साल का लंबा वक्त बीत चुका है, लेकिन डिलीवरी के बाद उनके बढ़े वजन में को कम करना उनके लिए काफी मुश्किल था। बेटे को जन्म देने के बाद से ही अदाकारा अपने बढ़े वजन को कम करने की कोशिश कर रही हैं। हालांकि अदाकारा ने मदरहुड वेट को बहुत प्राउडली लिया है। अदाकारा ने बहुत ही मुश्किल से अपना थोड़ा वजन कम किया है, जिसकी तस्वीरें एक्ट्रेस सोशल मीडिया पर शेयर करती रहती हैं।टीवी के मशहूर होस्ट जय भानुशाली की पत्नी और अभिनेत्री माही विज का वजन बेटी तारा के जन्म के बाद काफी बढ़ गया था। अभिनेत्री को मां बनने के बाद अपने बढ़े हुए वजन के लिए बुरी तरह से ट्रोल किया गया था। माही विज आज भी अपना वजन कम करने की जद्दोजहद में लगी हैं। माही विज ने ट्रोल्स को मुंहतोड़ जवाब देते हुए कहा था, श्क्या आपकी मां आपको जन्म देने के बाद पतली थीं।स्टार प्लस के मशहूर सीरियल शदिया और बाती हमश की संध्या बींदणी यानी दीपिका सिंह ने भी मां बनने के बाद बढ़े हुए वजन के कारण काफी दिक्कतों का सामना किया था। अपनी परेशानियों के बारे में बात करते हुए दीपिका ने कहा था, श्बेटी सोनम को जन्म देने के बाद मैं 73 किलो की हो गई थी। मैंने बिना सोचे अपनी एक तस्वीर अपने बर्थडे पर सोशल मीडिया पर शेयर की। जिसके बाद मुझे काफी खराब कमेंट्स मिले थे। मुझे बहुत बुरी तरह से ट्रोल किया गया था।साल 2022 बहुत सी अभिनेत्रियों के लिए खास रहा है। टीवी जगत से लेकर बॉलीवुड तक कई एक्ट्रेसिस हैं ऐसी हैं, जिनके घर इस साल नन्हे मुन्ने मेहमानों का जन्म हुआ है। ये अभिनेत्रियां अपने जीवन के इस नए सफर की शुरुआत करके काफी खुश हैं और आए दिन मातृत्व से जुड़े सुखों के बारे में बताती रहती हैं। लेकिन प्रेग्नेंसी एक फेज अगर खुशी से भरा होता है, तो दूसरा कभी–कभी महिलाओं के लिए दुखों का कारण भी बन जाता है। फिर चाहे आम महिला हो या कोई अभिनेत्री प्रेग्नेंसी के बाद बढ़ा हुआ वजन बहुत ही आम बात होती है और यह वजन घटाना किसी मुसीबत से कम नहीं होता। इस वजन को कम करने में कई टीवी अभिनेत्रियों को भी दिक्कतों का सामना करना पड़ा है, जिसके कारण वह ट्रोलिंग का शिकार भी हो चुकी हैं। ऐसे में आज इस रिपोर्ट में हम आपको उन अभिनेत्रियों के बारे में बताने जा रहे हैं, जो बढ़े वजन के लिए ट्रोल हो चुकी हैं और उन्हें अपना ये वजन घटाने में काफी दिक्कतों का सामना भी करना पड़ा था। अनुपमाश से घर–घर के लोगों के दिलों पर राज कर रही अभिनेत्री रूपाली गांगुली भी प्रेग्नेंसी के बाद बढ़े वजन के कारण ट्रोलिंग का शिकार हो चुकी हैं। रूपाली गांगुली ने अपने उन दिनों के बारे में बात करते हुए बताया था, श्जब मेरा बेटा रुद्रांश हुआ तो मेरा वजन 58 से 86 किलो तक पहुंच गया था। जब मैं अपने बच्चे को घुमाने बाहर लेकर जाती थी तो कई पड़ोसी, जिन्हें सही से मैं जानती तक नहीं थी। बोलती थीं कि तुम कितनी मोटी हो गई हो। किसी मां को उसके बढ़े वजन के लिए जज करने का अधिकार आपको किसने दिया।सात महीने के अंदर दोबारा मां बनी अभिनेत्री देबीना बनर्जी के घर कुछ दिनों पहले ही दूसरी बेटी का जन्म हुआ है। अपने जीवन में आई खुशी से देबीना और गुरमीत काफी उत्साहित महसूस कर रहे हैं। लेकिन अभिनेत्री इस वक्त बढ़ते वजन से जूझ रही हैं। इस बात की जानकारी देबीना ने खुद अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर कुछ तस्वीरें साझा करके दी है। टीवी की मशहूर अभिनेत्री अनीता हसनंदानी के बेटे का जन्म हुए डेढ़ साल का लंबा वक्त बीत चुका है, लेकिन डिलीवरी के बाद उनके बढ़े वजन में को कम करना उनके लिए काफी मुश्किल था। बेटे को जन्म देने के बाद से ही अदाकारा अपने बढ़े वजन को कम करने की कोशिश कर रही हैं। हालांकि अदाकारा ने मदरहुड वेट को बहुत प्राउडली लिया है। अदाकारा ने बहुत ही मुश्किल से अपना थोड़ा वजन कम किया है, जिसकी तस्वीरें एक्ट्रेस सोशल मीडिया पर शेयर करती रहती हैं।टीवी के मशहूर होस्ट जय भानुशाली की पत्नी और अभिनेत्री माही विज का वजन बेटी तारा के जन्म के बाद काफी बढ़ गया था। अभिनेत्री को मां बनने के बाद अपने बढ़े हुए वजन के लिए बुरी तरह से ट्रोल किया गया था। माही विज आज भी अपना वजन कम करने की जद्दोजहद में लगी हैं। माही विज ने ट्रोल्स को मुंहतोड़ जवाब देते हुए कहा था, श्क्या आपकी मां आपको जन्म देने के बाद पतली थीं।स्टार प्लस के मशहूर सीरियल शदिया और बाती हमश की संध्या बींदणी यानी दीपिका सिंह ने भी मां बनने के बाद बढ़े हुए वजन के कारण काफी दिक्कतों का सामना किया था। अपनी परेशानियों के बारे में बात करते हुए दीपिका ने कहा था, श्बेटी सोनम को जन्म देने के बाद मैं 73 किलो की हो गई थी। मैंने बिना सोचे अपनी एक तस्वीर अपने बर्थडे पर सोशल मीडिया पर शेयर की। जिसके बाद मुझे काफी खराब कमेंट्स मिले थे। मुझे बहुत बुरी तरह से ट्रोल किया गया था।

झुग्गी झोपड़ी

सत्वाधिकार, मुद्रक एवं प्रकाशक संजय कुमार यादव द्वारा रमा प्रिंटिंगप्रेस 53/25/1ए, बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित रहीमाबाद पोस्ट कटहुला गौसपुर जिला प्रयागराज तहसील सदर से प्रकाशित

सम्पादक
संजय कुमार यादव

RNI No.: UPHIN/2015/63182
दूरभष : 0532–2618074
मोबाईल : 9918366626
डाक पंजिकृत ए/बी 123/21. 23
e-mail: Jhuggijhopari@gmail.com
Website- www.Jhuggijhopari.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदाई तथा इन से उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा